ISSN:2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ २०७९ जून २०२२

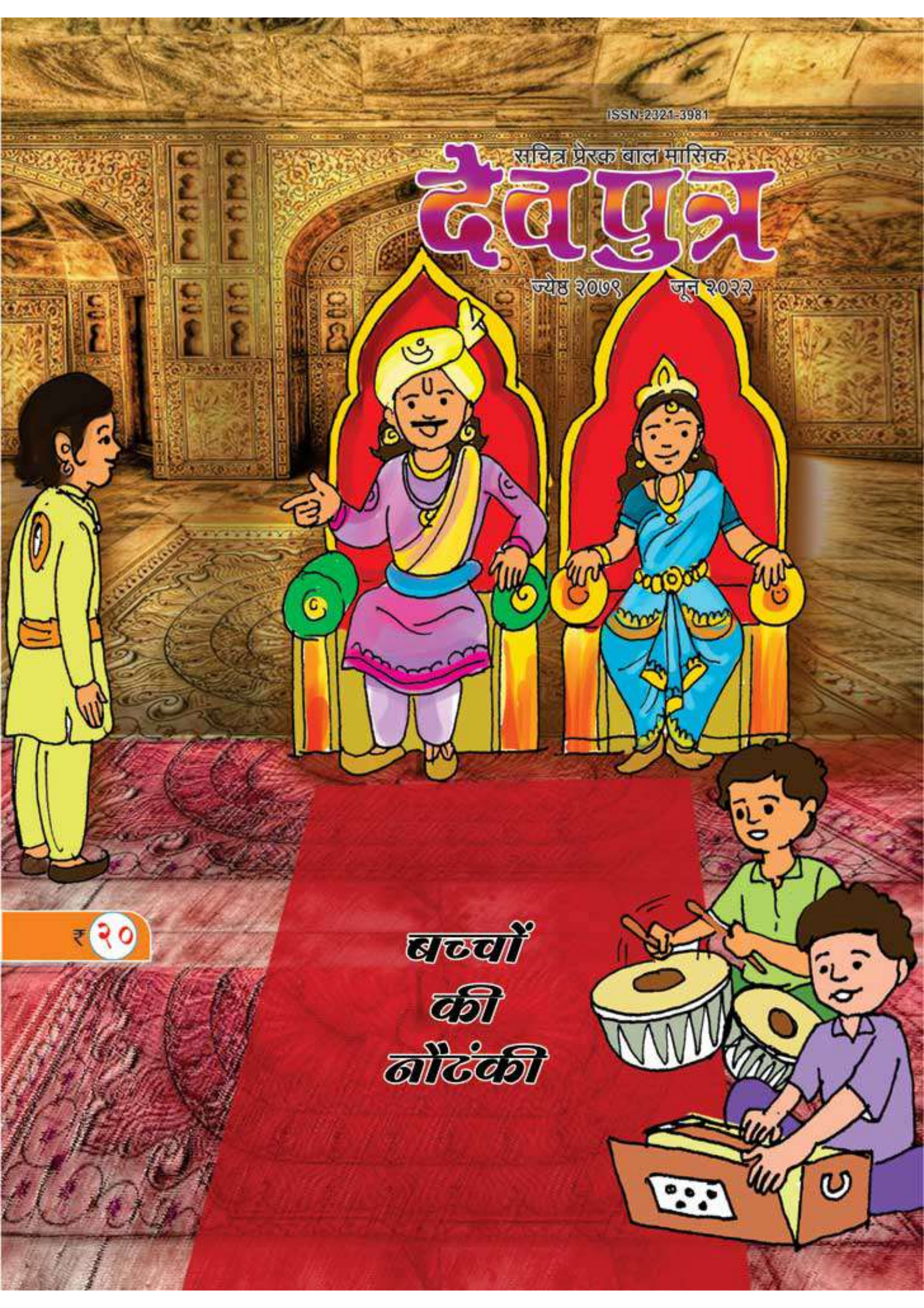

₹ २०

बच्चों की नौटंकी

कविता

धरती माँ

– डॉ. भैरूँलाल गर्ग

जिसकी गोदी में जन्म लिया,
हम धरती माँ के गुण गाएँ।
यह सबको धारण करती है,
सेवा से तनिक न डरती है,
यह कष्ट सभी का हरती है,
यह जननी की भी जननी है,
पाकर ममता बढ़ते जाएँ।
फल, फूल, पात हमको देती,
होती इस पर अद्‌भुत खेती,
यह तनिक न हमसे कुछ लेती,
है दानशील सबसे बढ़कर,
तुलना न किसी से कर पाएँ।
यह रात-दिवस चलती जाती,
थक कर न कभी है सुस्ताती,
चुप-चुप, चुप-चुप, चुप-चुप गाती,
देती सबको संदेश अमर,
जीवन में इसको अपनाएँ।
धरती माँ सबको प्यारी है,
देवोपम महिमा न्यारी है,
हम सब हैं इस पर बलिहारी,
इसकी माटी पावन चंदन,
करके तिलक धन्य हो जाएँ।
है इस पर अब संकट भारी,
हम सबकी यह जिम्मेदारी,
अब खत्म यहीं हो लाचारी,
आओ हम इसकी रक्षा में,
बस, हाथ बढ़ाकर जुट जाएँ।

– भीलवाड़ा (राज.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

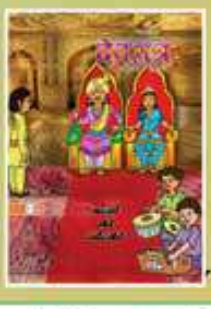

ज्येष्ठ २०७९ ▪ वर्ष ४२
जून २०२२ ▪ अंक १२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

जब फिल्मों का इतना प्रचलन नहीं था, और न इतने सिनेमाघर या घरों में टी. वी. या जेबों में स्मार्ट फोन, तब भी साधारण मनुष्यों के लिए नाट्य के कई रूप प्रचलित थे जैसे स्वांग, तमाशा, नौटंकी, रामलीला, रासलीला, ये सब लोक नाट्य के ही रूप हैं। परम्परा के रूप में एक-दूसरे से अभिनय सीखते हुए स्थानीय साज सामग्री से मंच सज्जा करके, गीत-संगीत में गूँथकर इन नाट्यों में धार्मिक, ऐतिहासिक या सामाजिक विषयों पर प्रस्तुति दी जाती थी। स्थानीय बोली में मनोरंजक गद्य-पद्य मिश्रित संवाद, रंगबिरंगी वेशभूषा के साथ खुले मंच पर इन लोक कलाकारों की ये प्रस्तुतियाँ इतनी प्रभावी होती थीं कि लोग रात-रातभर बैठकर इन्हें देखते थे। ठण्डी-ठण्डी रातों में एक नहीं आसपास के कई गाँवों तक हवा में बिना लाउडस्पीकर के भी इनके संवाद व संगीत की ध्वनि व्यक्ति को बरबस मंच तक खींच लाने का आकर्षण रखती थी।

सहजता, सरलता, व्यावहारिकता इतनी कि नाटक, नौटंकी, तमाशा जैसे शब्द मुहावरों में प्रयोग होने लगे। कोई किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर, बोलने व शरीर के माध्यम अभिनयपूर्वक प्रस्तुत करने वाले को व्यंग्यपूर्वक नाटक, तमाशा या नौटंकी करने वाला कह दिया जाता है। लेकिन वास्तव में नाटक, नौटंकी, तमाशा बहुत प्रकार की कलाएँ (गीत, संगीत, संवाद, अभिनय, मंचसज्जा आदि) जानने वाले कलाकारों का काम होता है, जिन्हें एक लम्बी साधना करना होती है। इनके लिए फिल्मों की तरह न मेकअप (रूपसज्जा), ड्रेस (वस्त्र सज्जा) न ही कोरियोग्राफर (नृत्य प्रशिक्षक) अलग से होता है न इन्हें संवाद या अभिनय गलत होने पर बदलने (रीटेक) की सुविधा मिलती है।

बच्चो! इन कलाओं को दर्शक, उचित पारिश्रमिक व सम्मान का अभाव इन्हें लुप्त करता जा रहा है।

इस अंक में आपके लिए 'नौटंकी' विधा पर मूर्द्धन्य बाल साहित्यकार स्व. श्री श्रीप्रसादजी की रचना प्रस्तुत है। 'कौशल विकास' की चर्चा राष्ट्रीय शिक्षानीति में भी खूब हो रही है इस विषय को डॉ. श्रीप्रसाद जी ने अपने ढंग से छुआ है। आप अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन पर इसे मंच पर खेल सकते हैं, यह एक अलग प्रकार का मनोरंजन होगा और लुप्त होती एक विधा के प्रति आदर भी।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- धुन -राजीव सक्सेना ०५
- अपने हिस्से का सुख -मधु गोयल १८
- बोया पेड़ बबूल का -शिखरचंद जैन ३०
- जान न पहचान मैं..... -डॉ. अमिताभ शं. राय चौधुरी ३६
- जंगल की सैर -किसलय हर्ष ४०
- हड़ताल -अनंत आलोक ४४

छोटी कहानी

- पानी रे पानी -प्राजक्ता देशपाण्डे ०८
- कौआ और बिल्ली -बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' २१
- न्याय -डॉ. उमेशचन्द्र नैथानी २३
- पक्षियों की व्यथा -विनीता सिंह चौहान ४३
- मनाया योग दिवस -पूनम पाण्डे ४७
- बीमार मछली -रमेश रंजन त्रिपाठी ४९

लघुकथा

- सम्मान -गोविन्द भारद्वाज ३२

चित्रकथा

- जंपी की टाफियाँ -देवांशु वत्स १६
- कहाँ हूँ -संकेत गोस्वामी ३३

कविता

- धरती माँ -डॉ. भेरूँलाल गर्ग ०२
- जल संरक्षण -दिनेश विजयवर्गीय २६
- योग ढले दोहे -डॉ. रानी कमलेश २८
- वर्षा -उदय मेघवाल 'उदय' ३२
- सबको लगे सुहानी -डॉ. फहीम अहमद ४८
- माँ सारी दुनिया से लड़कर -श्यामपलट पाण्डेय ५०

स्तंभ

- शिशु गीत -शिशुपाल सिंह 'निर्धन' ०७
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' ०९
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी २२
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २५
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान २८
- सरल विज्ञान -संकेत गोस्वामी २९
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ३४
- आपकी पाती ३८
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी ३९
- पुस्तक परिचय ४२
- छः अंगुल मुस्कान ४८

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ते क्रम में -देवांशु वत्स २०

विविध

- ये भी जानिए -राजेश गुजर २७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी

धुन

– राजीव सक्सेना

यू–ट्यूब पर फिल्म चल रही थी। फिल्म महान वैज्ञानिक टेरला के जीवन पर आधारित थी। सजल बड़े मनोयोग से फिल्म देख रहा था।

सजल को विज्ञान फिल्में देखने का बड़ा शौक था। महान वैज्ञानिकों पर बनी फिल्में तो उसे बहुत पसन्द थीं।

विशेषकर सजल की विज्ञान में बड़ी रुचि थी। बड़ा होकर वह वैज्ञानिक बनना चाहता था और कोई ऐसा आविष्कार करना चाहता था कि माँ–पिता और उसके साथी ही नहीं बल्कि पूरा देश उस पर गर्व करे।

सजल को बचपन से ही मशीनी कलपुर्जों से खेलने का बड़ा शौक था। वह अपने आसपास की मशीनों पंखा, कूल, टेलीविजन, वाशिंग मशीन इत्यादि को बड़े ध्यान से देखता था और झटपट उनका छोटा प्रादर्श (मॉडल) भी बना लेता था।

सजल की इस प्रतिभा के बारे में उसके सभी मित्र अच्छी तरह जानते थे। शायद यूँ ही वह अपने सहपाठियों के बीच 'लिटिल साइंटिस्ट' के रूप में खासा लोकप्रिय था।

लेकिन सजल अपने सपने से अभी काफी दूर था।

यू–ट्यूब पर चल रही फिल्म समाप्त होने ही वाली थी कि एकाएक मोबाइल की घंटी बजने लगी।

यह सजल के सहपाठी तुषार की काल थी।

फिल्म रुक गई। दूसरी ओर से तुषार बोला– ''सजल तेरे लिए खुशखबरी है। बेंगलूरू में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की ओर से राष्ट्रीय स्तर की विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है जिसमें प्रदर्शित प्रादर्श को बड़े पुरस्कार दिए जाएँगे। सजल यह तुम्हारे लिए कुछ कर दिखाने और आगे बढ़ने का अच्छा अवसर है। तुम्हें इस अवसर का भरपूर लाभ उठाना चाहिए...।''

''ठीक है, मैं आज से ही अपना काम प्रारंभ करता हूँ।''

सजल ने कहा। फिर कुछ क्षण रुककर बोला– ''लेकिन एक कठिनाई है।'' राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के लिए कोई अनोखी प्रादर्श बनाने के लिए काफी रुपए–पैसे की आवश्यकता होगी और कोरोना के कारण पिताजी का काम–धंधा आजकल चल नहीं रहा। वे बेचारे किसी प्रकार से हम सात लोगों के परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं।''

सजल के पिताजी बैटरी रिक्क्षा चलाते थे। लेकिन इन दिनों लॉकडाउन लागू होने के कारण उनका यह काम ठप्प हो गया था।

सजल के स्वर में छिपी निराशा को तुषार ने अनुभव कर लिया।

''निराश मत हो मित्र! वह कहावत तो सुनी होगी– 'जहाँ चाह वहाँ राह!' प्रदर्शनी के लिए कोई बड़ी और महँगी प्रादर्श बनाने की आवश्यकता नहीं है। जितनी चादर है उतने ही पाँव पसारो। फिर सोचो महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने तो कोई महँगा प्रयोग या मॉडल बनाए बिना ही विश्व के महानतम वैज्ञानिक के रूप में ख्याति अर्जित कर ली थी।

अपने ही देश के विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक सी. वी. रमन ने तो मात्र सौ–डेढ़ सौ रुपये में रमन प्रभाव पर आधारित मॉडल बनाकर नोबल पुरस्कार प्राप्त कर लिया था.. मित्र! आविष्कार धुन से होते हैं मात्र रुपयों से नहीं।''

''वह सब तो ठीक है... एक बात बताओ, तुम मेरी सहायता करोगे?''

''हाँ! क्यों नहीं? आखिर मित्र होते किस लिए हैं?'' तुषार ने कहा तो सजल एक नए उत्साह से भर उठा।

बस, फिर क्या था।

सजल में जैसे बिजली भर गयी। वह सोचने लगा– राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के लिए आखिर क्या प्रादर्श बनाऊँ जो वैज्ञानिकों और दुनिया के लिए काम का हो और वैज्ञानिक बनने का मेरा सपना भी साकार हो जाए?

सजल दिन रात अपनी प्रादर्श के बारे में सोचने लगा। अब सोते–जागते वह अपनी प्रादर्श का सपना देखता। उसे अक्सर भारत के पूर्व राष्ट्रपति और वैज्ञानिक डॉ. कलाम का एक वाक्य याद आता– **सपना वह नहीं होता जो हम नींद में देखते हैं बल्कि वह होता है जो हमें सोने नहीं देता।**

लेकिन सजल को अभी भी किसी अनोखे प्रादर्श का उपाय नहीं सूझ रहा था। तभी एक दिन सजल के मस्तिष्क में जैसे हजार वाट का बल्ब जगमगा उठा। हालीवुड की एक फिल्म में उसने मैटर यानी किसी भी वस्तु को 'ट्रांसमिट' करने वाली एक मशीन को देखा था। फिल्म की बात अलग थी लेकिन धरती के वैज्ञानिक आज तक ऐसी कोई मशीन नहीं बना पाए थे।

सजल को जैसे राह दिख गयी। बस, सजल ने निश्चय कर लिया– 'मैं मैटर ट्रांसमीटर की प्रादर्श बनाऊँगा।'

सजल के मस्तिष्क में 'मैटर ट्रांसमीटर' की रूपरेखा उभरने लगी।

उसने तुषार को फोन किया– ''हमें अभी कबाड़ी बाजार चलना होगा। बिजली मैकेनिकों से कुछ आवश्यक सामान और काँच के क्रिस्टल खरीदने होंगे।''

जल्दी ही दोनों मित्र कबाड़ी बाजार की खाक छानने लगे। बिजली के सामान की दुकानों पर भटकने लगे।

कुछ दिनों की मेहनत के बाद अंत में सजल को अपने मैटर ट्रांसमीटर के लिए आवश्यक चुम्बक, बिजली के तार, क्वाईल, बैटरी डायनमो इत्यादि सारे उपकरण उपलब्ध हो गए।

सजल का मैटर, ट्रांसमीटर बनकर तैयार हो गया।

सचमुच यह एक अद्‌भुत यंत्र था। सजल का मैटर ट्रांसमीटर आलपिन, बटन, लोहे के पेंच इत्यादि छोटी–मोटी वस्तुओं को एकाएक गायब कर डेढ़–दो मीटर की दूरी तक 'ट्रांसमिट' कर देता था।

बेंगलूरू की विज्ञान प्रदर्शनी में सजल के मैटर ट्रांसमीटर की प्रादर्श प्रदर्शित हुई तो वहाँ तहलका मच गया। स्वयं इसरो के वैज्ञानिक इसे बनाने का सपना संजो रहे थे और वर्षों की मेहनत के बाद भी उन्हें सफलता नहीं मिली थी। उसके जैसा एक भी प्रादर्श यहाँ नहीं था।

सजल का मैटर ट्रांसमीटर देखकर वैज्ञानिकों ने दाँतों तले अँगुली दबा ली। अंतरिक्ष में वैज्ञानिक या मशीनी उपकरणों को पहुँचाने का उनका काम अब बहुत आसान और सस्ता होने वाला था।

सजल के प्रादर्श से अब अंतरिक्ष की ही नहीं बल्कि धरती की भी तस्वीर बदलने वाली थी।

इसरो के वैज्ञानिकों ने बड़ा पुरस्कार देते हुए सजल की पीठ थपथपायी तो उसे वैज्ञानिक बनने का अपना सपना साकार होता दिखने लगा। आखिर उसकी धुन ने अपना रंग दिखा ही दिया था।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

शिशुगीत

दुल्हन आई गोल मटोल

– शिशुपाल सिंह 'निर्धन', – खुर्जा (उ. प्र.)

स्व. श्री शिशुपाल सिंह जी निर्धन बाल साहित्य जगत के प्रथम श्रेणी के रचनाकारों में स्थापित हैं। उनका जन्म १९ जून १९२९ को नगला मुइद्‌दीनपुर (उ. प्र.) में हुआ। मई २००५ में आपका निधन हुआ। प्रस्तुत है उनकी एक रचना।

हल्लू हाथी की बारात
बन्दर पाँच बन्दरियें सात
बिल्ली चली बजाती बीन
भूरे काले बच्चे तीन
हाथी थे ग्यारह सौ आठ
सबके अजब अनोखे ठाठ
उछल–उछल नाचे खरगोश
सबके मन में कितना जोश
भालू चला बजाता ढोल
दुल्हन आई गोल मटोल

छोटी कहानी

पानी रे पानी

– प्राजक्ता देशपाण्डे

''बाप रे बाप! कितनी तेज वर्षा हो रही है? बिजली तो लगता है जैसे घर में ही घुस जाएगी।'' बादलों की गड़गड़ाहट सुन आयुषी डरते हुए अपने कानों पर हाथ रख माँ से लिपट कर बोली।

''इसमें डरने वाली कौन सी बात हैं देखो बाहर मौसम कितना सुहावना है। सारे पेड़-पौधे, मकान कैसे नहा धोकर फ्रेश लग रहे हैं।'' माँ ने हँसते हुए कहा। ''वह सब तो ठीक हैं लेकिन यह तो पूरा दिन बस आती ही रहती है। आखिर कितनी देर घर में बंद पड़े रहो बताओ आप? बाहर जाते ही जगह-जगह पानी से भरे गड्ढे चलना भी कठिन हो जाता है। मुझे तो यह मौसम बिलकुल भी पसंद नहीं है।'' आयुषी दो दिन से लगातार चल रही वर्षा से बहुत चिढ़ी हुई थी।

''हूँ!'' माँ ने छोटा-सा उत्तर दिया।

''प्रत्येक वर्ष इतनी वर्षा होती है फिर भी गर्मियाँ प्रारंभ होते ही हमारी कॉलोनी में पानी की कमी हो जाती है। आप तो मुझे नहाने के लिए भी आधा बाल्टी पानी देती हो।'' आयुषी ने गुस्से से कहा।

''हाँ बेटा! तुम्हारी बात सही है, कारण है वर्षा जल के संग्रहण की उचित व्यवस्था का ना होना। जिससे सारा पानी यूँ ही सड़कों पर बह जाता है। इसके सिवाय हम सब अपनी सुविधा के अनुसार से कही भी खुली भूमि नहीं छोड़ते केवल कांक्रीट का जाल फैला हुआ है। इससे वर्षा का जल ना ही मिट्टी में जा कर भू-जल स्तर को बढ़ाता है और ना ही हम इसका गर्मियों में उपयोग कर पाते हैं। परिणाम नालों या सड़कों पर पानी से भरे गड्ढ़ों के कारण से होने वाली दुर्घटनाएँ और पानी की कमी।'' माँ ने समझाया।

''हाँ! आप सही कहती हो। पिछले वर्ष विज्ञान प्रदर्शनी में एक बच्चे ने वर्षा जल के संग्रहण व्यवस्था पर एक प्रादर्श (मॉडल) भी बनाया था। जिसे प्रथम पुरस्कार मिला था।'' आयुषी ने थोड़ा विचार करते हुए कहा।

''असल में वर्षा तो धरती पर रहने वाले जीवों के लिए वरदान है। क्योंकि जल ही जीवन है। बस हम इसका सही प्रकार से उपयोग करना नहीं सीखते और केवल शिकायत करते रहते हैं। बेटा! प्रकृति कभी हमारा बुरा नहीं चाहती वह तो दोनों हाथों से भर-भर कर हमें अपनी सौगात देने का प्रयत्न करती है। इसलिए ऋतु चाहे जो भी हो हमें उसका प्रसन्नता से स्वागत करते हुए उसके ठीक उपयोग के लिए तैयार रहना चाहिए।'' माँ ने कहा। ''आपकी यह बात में हमेशा ध्यान रखूँगी, और हम भी अपने घर में वर्षा जल के संग्रहण की व्यवस्था करेंगे। फिर हमारी गर्मियाँ भी मजेदार होंगी, हैं ना माँ।'' कहते हुए आयुषी ने वर्षा देखने के लिए खिड़की खोल दी।

''हाँ बेटा! मैं आज ही तुम्हारे पिताजी से इस बारे में बात करूँगी।'' माँ ने कहा। वर्षा की बूँदों को सहेजने के लिए आयुषी के साथ माँ ने भी अपने दोनों हाथ खिड़की से बाहर फैला दिए।

– इन्दौर (म. प्र.)

सम्पूर्ण बालसाहित्यकार डॉ. श्रीप्रसाद

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

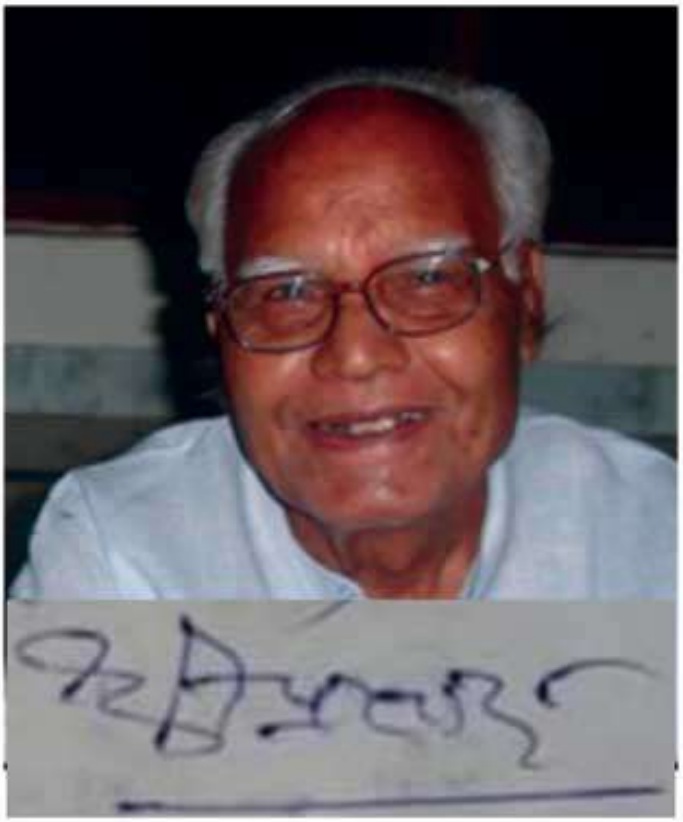

प्यारे बच्चो!

कहते हैं सारा संसार एक रंगमंच है और हम सब अभिनेता। अच्छा, आप तो यह बताओ कि क्या आपने कभी अभिनय किया है? नाटक में अभिनय तो अवश्य देखा होगा न?

नाटक का ही एक रूप है नौटंकी। पुराने जमाने में नौटंकी खूब खेली जाती थीं ढेर सारे दर्शक साथ बैठकर उसे देखते थे ढोल–नगाड़े–मंजीरे के साथ इसकी रंगत ही कुछ और होती थी।

इस बार हम आप बच्चों के लिए एक नौटंकी प्रस्तुत कर रहे हैं। आपके शिक्षक यदि इसे विद्यालय में प्रस्तुत करा सकें तो क्या बात हो।

इसके लेखक हैं डॉ. श्रीप्रसाद (५ जनवरी १९३२, १२ अक्टूबर २०१२) बाल साहित्य के सम्पूर्ण रचनाकार थे।

मतलब कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, यात्रावृत, समीक्षा के साथ–साथ उन्होंने पी.एचडी. भी बाल साहित्य में ही की। हर विधा में उनकी पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

उनका जन्म आगरा, उत्तर प्रदेश के पारना गाँव में पंडित रामचरण चुरारिया और महारानी देवी के पुत्र में रूप में हुआ था।

अपनी लगन के बल पर वे वाराणसी के संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर बने। उनकी पहली रचना १७ वर्ष की अवस्था में १९४९ में बालसखा में प्रकाशित हुई थी।

डॉ. श्रीप्रसाद ने हजारों सरल–सहज बाल कविताएँ लिखीं एक बानगी देखिए।

बीस कचौड़ी पूड़ी तीस , दही बड़े खाये इकतीस।
तीन पाव रबड़ी खाई, खीर कटोरे भर आई।।
लाला सब कुछ खाकर के, बोले यों झल्ला करके।
पापड़ नहीं खिलाया है, भूखे मुझे उठाया है।।

स्वीडन से बाल कविताओं का संकलन आया तो उसमें भारत से केवल दो बाल कवियों एन. मुदलियार और श्रीप्रसाद जी को शामिल किया गया।

मेरा साथी घोड़ा, गीत ज्ञान विज्ञान के, मेरी प्रिय बाल कविताएँ, फूलों के गीत, गीत में पहेलियाँ मेरे प्रिय शिशु गीत, पिकनिक और अन्य कहानियाँ, खरगोश के सींग, मेरी प्रिय बाल कहानियाँ, ढोल बजा, पंचतंत्र के नाटक, शाबाश श्याम अतू की आत्मकथा, बनारस से बल्गारिया उनकी चर्चित पुस्तकें हैं।

उनकी पुस्तक हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा में बाल साहित्य का इतिहास देखा जा सकता है।

बाल साहित्य लिखने वालों को उनकी पुस्तक **बाल साहित्य की अवधारणा** अवश्य पढ़नी चाहिए।

तो आइए, हम सब पढ़ते हैं बच्चों के लिए लिखी गई उनकी नौटंकी–

हुनरमंद

जय गणेश, शिवसुत, गज आनन आप सुनें विनती,
सब कामों में सिर्फ आपकी पहले है गिनती।
राजा, राजकुमार, भिखारी, व्यापारी, अफसर,
आदर करें हुनरवाले का सीखें स्वयं हुनर।
हो विद्वान, धनी हो कोई उसे हुनर आए,
शिल्पकला, श्रम और हुनर सबके मन का भाए।
जय गणेश गणपति, लोगों के नये विचार करो,
पाए आदर हुनर, हृदय में ऐसा भाव भरो।
बदल गया है समय, सभी हैं अब समान जग में,
मिलकर चलने वाले हैं सभी एक मग में।
जय गणेश, शिवसुत, गज आनन आप सुने विनती,
सब कामों में सिर्फ आपकी पहले है गिनती।

(दो वाचक आते हैं)

दोनों वाचक (लावणी)

एक कहानी सुना रहे हैं। सुनो जरा,
और कहानी अपने मन में गुनो जरा।

एक वाचक–बड़ी पुरानी कथा कहानी है।

दूसरा वाचक–जिसे सुनाती मेरी नानी है।

एक वाचक–मेहनत करना और सीखना काम हुनर।

दूसरा वाचक–ऐसा ही आदमी सदा लगता सुन्दर।

एक वाचक–काम हुनर का कोई भी यदि करता है,

दूसरा वाचक–वह उदाहरण एक सामने धरता है।

एक वाचक–तो मतलब यह निकला, सीखें हुनर सभी

दोनों वाचक – हुनरमन्द का होगा नाटक एक अभी।

(वाचक जाते हैं, अँधेरा होता है। प्रकाश, राजभवन का दृश्य, राजा–रानी और राजकुमार उपस्थित हैं।)

राजा– बेटा! अब मैं बूढ़ा हो गया, आयु बहुत हो गई न जाने किस दिन...

(दोहा) – मैं बूढ़ा अब हो गया, बेटा राजकुमार।
जल्दी ही जाना मुझे, इस दुनिया के पार।।
जाने आए काल कब, हर ले मेरा प्राण।
रह जाएगी तब नहीं, धरती पर यह जान।।

लेकिन बेटा! मुझे इस बात का दुख नहीं है कि मैं नहीं रहूँगा। मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूँ...

(दोहा)

मेरी इच्छा है यही, कर ले अपना ब्याह।
फिर गद्दी पर बैठ तू पूरी कर यह चाह।।

(लावणी)

चाह पूरी कर मेरी, न कर अब तू कुछ देरी।
ढूँढ ले राजकुमारी, ब्याह की कर तैयारी।
तुझे जो लड़की भाए, ब्याह कर इस घर आए।

राजकुमार– (लावणी)

आपकी आज्ञा मानूँगा, न मन में कुछ अब ठानूँगा।
खोजने लड़की जाता हूँ, और फिर वापस आता हूँ।
बात आकर बतलाऊँगा, तभी मैं ब्याह रचाऊँगा।
दीजिए आज्ञा मुझको अब, सही हो काम पुत्र का सब।

राजा– (लावणी)

आज्ञा मेरी सुनो, ढूँढकर लाओ राजकुमारी।
समझदार हो, सुन्दरता हो, जिसमें जग की सारी।
करे प्रजा को प्यार, प्रजा की सेवा में सुख माने,
बने राज्य की रानी, जो विद्वानों को सम्माने।
दे तुमको भी बुद्धि, राह जो हरदम सही।
बताए 'धन्य धन्य रानी' हर प्राणी कह करके गुण गाए।
करो राज की सेवा दोनों, प्रजा सुखी हो जाए।
समझो तुम कर्त्तव्य, न कोई कभी–कभी दुख पाए।

रानी– (दोहा)

जाओ बेटा, हम दोनों का, है आशीष महान।
देखूँ अपनी बहू महल में, तब खुश होंगे प्राण।।

(राजकुमार दोनों के पैरों पर झुकता है। राजा–रानी आशीर्वाद देते हैं। अँधेरा होता है, फिर प्रकाश, दोनों वाचक आते हैं।)

एक वाचक–

चला खोजने राजकुमारी, घोड़े पर चढ़ राजकुमार।

दूसरा वाचक–

सुन्दर अच्छी राजकुमारी, पाना था काफी दुश्वार।

एक वाचक–

एक देश में पहले पहुँचा, देखी राजकुमारी।

दूसरा वाचक–

सुन्दर तो थी, लेकिन वह थी, मन की क्रोधी भारी।

एक वाचक–

गया दूसरे देश नहीं, उसका मन भरा वहाँ भी,

दूसरा वाचक–

मिली न मन की राजकुमारी, भटका जहाँ–जहाँ भी।

एक वाचक–

मगर अंत में एक देश में, पहुँचा राजकुमार।

दूसरा वाचक–

किया वहाँ राजा ने उसका, बहुत अधिक सत्कार।

दूसरा वाचक–

राजकुमार प्रसन्न हो गया, हृदय हुआ खुश भारी।

एक वाचक–

खिले फूल–सी जब आयी, सकुचाती राजकुमारी।

एक वाचक–

राजकुमारी सुन्दर भी थी, सीधी भी थी, भोली।

दूसरा वाचक–

हँसकर ही बातें करती थी, मिसरी–सी थी बोली।

(दोनों वाचक जाते हैं। राजकुमार और राजकुमारी आते हैं।)

राजकुमार (तवील)

मैंने चाहा तुम्हें, किन्तु तुम भी कहो,
योग्य हूँ या नहीं, सामने हूँ खड़ा।
ठीक समझो मुझे तो करूँ ब्याह में,
होगा सौभाग्य मेरा सही में बड़ा।
बात स्वीकार हो तो चलें साथ फिर,
होगा स्वागत तुम्हारा हमारे यहाँ।
जोहते बाट होंगे पिता और माँ,
और मैं हूँ यहाँ पर तुम्हारे यहाँ।

राजकुमारी (लावणी)

शर्त एक है एक बात यह पहले मुझे बताओ,
चाह रही है जैसा मन में, तुम विश्वास जगाओ।
तुम्हें हुनर आता है कोई ? शिल्पकला आती है ?
यह विचित्र है बात, किन्तु यह बात मुझे भाती है।
हुनरमंद हो तुम जो कर लूँ मैं तुमसे कल शादी,
और नहीं तो वापस जाओ, सारी बात बता दी।

राजकुमार- (दुबोला)

मैं राजपुत्र हूँ राजपुत्र क्या मुझे हुनर से लेना,
मुझको तो राजा बनना है, तुमको रानी पद देना।
छोटे होते हैं हुनरमंद, ये दस्तकार कारीगर,
छोटा विचार कैसे आया यह कहो तुम्हारे अंदर ?

राजकुमारी- (दुबोला)

क्या कहा, नहीं छोटा विचार है पहले बात सुनो,
इसके पीछे है बड़ी बात, तुम मन में जरा गुनो।
तुम राज करोगे यह सच है पर सोचो यह मन में,
घटना अजीब-सी कभी-कभी घटती है जीवन में।
कोई ले राज छीन, दोनों पर आफत आएगी,
जिंदगी कहो कैसे दोनों की तब कट पाएगी ?

लावणी- (और सुनो)

तुम्हारे पास हुनर जो हैं, बहुत बल समझो तब तो है।
राज चाहे छिन ही जाए, हुनर को कौन छीन पाए ?
जिन्दगी तब कट जाएगी, गरीबी नहीं सताएगी।

राजकुमार- (लावणी)

बात तुम्हारी मान हुनर अब मुझे सीखना है,
दस्तकार-सा हुनरमंद-सा मुझे दीखना है।
हुनरमंद बनकर कुछ दिन में वापस आऊँगा,
खुशी-खुशी तब आकर तुमसे ब्याह रचाऊँगा।

(अँधेरा राजकुमार और राजकुमारी का प्रस्थान वाचक आते हैं।)

एक वाचक-

हुनरमंद की बात बड़ी है, हुनर काम ही आता है।

दूसरा वाचक-

अगर हुनर सीखा है कोई, तो बेकार न जाता है।

एक वाचक-

राजकुमार आ गया वापस, और पिता से बात कही।

दूसरा वाचक-

राजकुमारी जो कुछ बोली, वह थी बिल्कुल बात सही।

(अँधेरा वाचकों का प्रस्थान प्रकाश होने पर राजकुमार, राजा और रानी दिखाई देते हैं।)

राजकुमार- (लावणी)

मिल गयी मुझे मनचाही राजकुमारी,
उसमें है दुनिया की सुन्दरता सारी।
वह समझदार है, चतुर और ज्ञानी है,
मैंने उससे ही शादी की ठानी है।
लेकिन उसने शादी की शर्त लगायी,
यह बात अजब-सी उसके मन में आयी।
मैं पहले सीखूँ हुनर, करूँ तब शादी,
हो कोई हुनर, शर्त यह कड़ी लगा दी।
मैं क्या सीखूँ ? खेती या बढ़ईगीरी ?
पर जल्दी कपड़ा सिलना आ जाएगा,
कोई भी हुनर रहे, उसको भा जाएगा।
बुलवा दे दरजी, मुझको हुनर सिखाए,
कुछ ही दिन में कपड़ा सिलना आ जाए।

राजा-रानी (लावणी)

तुम हो राजकुमार, मगर तुम कर लो उसके मन की।
साथी बनकर सदा रहेगी, आखिर वह जीवन की।।

राजा- (लावणी)

मैं बुलवा देता हूँ दरजी, तुमको हुनर सिखाये।
और बहुत जल्दी ही तुमको, कपड़ा सिलना आये।।

(राजा ताली बजाता है। एक नौकर आता है।)

राजा- जाओ, नगर के योग्य दरजी को तुरन्त बुलाकर लाओ।

नौकर- जैसी आज्ञा महाराज। (जाता है)

(अँधेरा, सभी जाते हैं, प्रकाश होने पर वाचक आते हैं।)

एक वाचक-

राजकुमारी के घर अपना राजकुमार चला,

दूसरा वाचक–

उसे आ गयी कपड़ा सिलने की अब एक कला।

एक वाचक–

राजकुमारी हुई बड़ी खुश, उसका ब्याह हुआ।

दूसरा वाचक–

हुए सभी खुश और महल में बड़ा उछाह हुआ।

(वाचक जाते हैं, राजा–रानी और दरबार। राजकुमारी–राजकुमार को जयमाला पहना रही है।)

(विवाह गीत)

सूरज जैसे राजकुँवर हैं, राजकुमारी परियों–सी,
राजकुमारी फूलों–सी है, या किरनों की लड़ियों–सी।
गाओ गीत, मनाओ खुशियाँ, धरती से आकाश मिला,
तारे खिले, चाँद हँसता है, आसमान में खिला–खिला।
आज भावना खिलखिल पड़ती, सभी ओर फुलझरियों सी
सूरज जैसे राजकुँवर हैं, राजकुमारी परियों सी।

(अँधेरा, प्रकाश होने पर वाचक आते हैं।)

एक वाचक–

राजकुमार महल में आया, आया खुश हो अपने घर।
जिसने देखा कहा उसी ने, जोड़ी है कितनी सुन्दर।।

दोनों वाचक– (दोहा)

मिलकर के रहने लगे, आयी खुशी अपार।
राजकुमारी मगन थी, खुश था राजकुमार।।

दोनों वाचक (चौबोला)

सोचा राजा ने उसी समय, मैं बूढ़ा होने को आया।
बेटे को सौंपूँ राजपाट, मैंने अब तक–सब कुछ पाया।
अब राज करे मेरा बेटा, बन जाए पुत्र–वधू रानी।
अब करें प्रजा की सेवा ये, ये बड़े भले, ये हैं ज्ञानी।
राजा ने तब आदेश दिया, बेटे का होगा राजतिलक।
देखें यह उत्सव लोग सभी, पहुँचा संदेशा जन–जन तक।

(वाचक जाते हैं, उनके जाते–जाते हरकारे की डुगडुगी के साथ आवाज गूँजती है।)

हरकारा– सुनो भाई सुनो, सब लोग सुनो। कल राजकुमार का राजतिलक होगा। हमारे महाराज कल अपने कुँवर को राजपाट सौंपकर अलग हो जाएँगे, सभी लोग कल राजतिलक का उत्सव देखने के लिए आएँ।

(अँधेरा... हरकारा जाता है। प्रकाश होने पर राजतिलक का आयोजन– पंडित मंत्र पढ़ते हैं, राजा राजतिलक करते हैं।)

(गीत)

हमारे राजकुँवर राजा, नये राजा हमने पाये।
बधाई देती है दुनिया, अहा! आनन्द मोद छाये।
सुखी हो राजकुँवर, अपने करेंगे पूरे ये सपने।
हुआ है आज सभी मन का कुँवर हैं राजा आज बने।
प्रजा के सेवक हैं सच्चे, गीत सबने इनके गाये।
हमारे राजकुँवर आजा नये राजा हमने पाये।

(अँधेरा, प्रकाश होने पर वाचक आते हैं।)

एक वाचक– (सवैया)

राजा नयी और रानी नये, पर बात यही उनकेमन आती।
राज सुखी हो, रहे न जरा दुख, सारी प्रजा हो प्रमोद मनाती।

दूसरा वाचक–

राजा चला यह देखने को तब, जीवन कैसे प्रजा बिताती,
वेश था दूसरा, डाकू मिले जब, इनमें प्रजा थी बड़ा दुःख पाती।

एक वाचक– (लावणी)

राजा चला देखने को, जब शासन अपना।

दूसरा वाचक– (लावणी)

देखा उसने उसी समय ज्यों कोई सपना।

(अँधेरा, वाचकों का प्रस्थान, प्रकाश, राजा अकेला मंच पर सोचता हुआ टहल रहा है। उसी समय तीन डाकू एकाएक आकर टूट पड़ते हैं और राजा को जो साधारण वेश में है, पकड़ लेते हैं।)

राजा–(छंद)

कौन हो तुम, मुझे पकड़ा है आकर,
पकड़ा किसी को अकेले में पाकर।
चोर हो डाकू हो, कौन हो आखिर?
तुमको नहीं लगता है बोलो कुछ डर?

डाकू– (लावणी)

यह तुम जल्दी ही जानोगे, तब तुम हमको पहचानोगे।

(डाकू राजा को जैसे घसीटते हुए ले जाते हैं। अँधेरा, प्रकाश, वाचक आते हैं।)

दोनों वाचक–

एक कोठरी में, राजा को बंद किया लाकर।
बोले तीनों डाकू फिर राजा से गुस्सा कर।

(अँधेरा होता है, वाचक जाते हैं। कोठरी का दृश्य राजा कैद है तीनों डाकू सामने खड़े हैं।)

एक डाकू– (लावणी)

हम है कौन, तुझे अब अच्छी तरह समझ में आएगा।
एक लाख देगा तू या फिर अपनी जान गँवाएगा।

दूसरा डाकू– (लावणी)

लिख दे चिट्ठी, पकड़ गया मैं, एक लाख जल्दी मँगवा।
हम डाकू हैं बड़े भयंकर, या फिर अपनी जान गँवा।

(राजा कुछ सोचता है।)

राजा–(लावणी)

एक लाख क्या मैं पूरे दो लाख दिलाऊँगा,
बड़ा सरल–सा मैं उपाय इसका बतलाऊँगा।
लाओ कपड़ा मैं दरजी हूँ राजमहल जाना,
मेरा सिला हुआ कपड़ा रानी को दिखलाना।
रानी है शौकीन, तुम्हें दो लाख तुरंत देगी।
मेरे सिले हुए कपड़े वह चट से ले लेगी।

सभी डाकू– हाँ ऐसा! यह तो बहुत अच्छी बात है। हम अभी कपड़ा लाकर देते हैं।

एक डाकू– और हम तुम्हारी हत्या भी नहीं करेंगे।

राजा– (छंद)

तो फिर कपड़ा लाओ, अब मत देर लगाओ।

(अँधेरा, वे सब जाते हैं, प्रकाश, रानी कमरे में बैठी है। एक दासी भी है।)

रानी– (दासी से) महाराज आये नहीं, वे वेष बदलकर राज्य की दशा देखने गए हैं।

दासी– (मुस्करा कर) आ जाएँगे महारानी! महाराज के लिए आप चिन्ता न करें।

(एक सेविका का प्रवेश वह प्रणाम करती है।)

बाहर दरजी आये हैं, सुन्दर कपड़े लाये हैं।
कहते हैं, हम कलाकार हैं, बड़ी दूर से आये हैं।

रानी– (कुछ सोचकर) ले आओ।

(सेविका और एक सिपाही के साथ डाकू कपड़े लेकर आते हैं और रानी को कपड़े देते हैं। रानी देखकर कुछ सोचती है और एकाएक यह कहकर– ''ये कपड़े तो'' रुक जाती है।

रानी– इन कपड़ों की क्या कीमत है?

एक दरजी– (दोहा)

कीमत ज्यादा है नहीं है केवल दो लाख।

दूसरा दरजी– (दोहा)

हम लोगों की हर जगह बहुत बड़ी है साख।

रानी– अच्छा (सिपाही से)
इनको कमरे में बैठाओ, मैं दो लाख भिजवाती हूँ।

(डाकू और सिपाही तथा सेविका जाते हैं। रानी कपड़े खोलती है। कपड़े में टंकी चिट्ठी निकालकर पढ़ती है। अँधेरा होता है। प्रकाश होने पर वाचक आते हैं।)

एक वाचक–
पढ़ी जब चिट्ठी टँकी हुई, बेचारी रानी दुखी हुई।
दूसरा वाचक–
तुरंत दो लाख दिला करके, साथ जासूस लगा करके।
दोनों वाचक– (लावणी)
खबर सेना को करवाई, और सेना छिपकर आई।
(अँधेरा, प्रकाश, डाकू रुपये लेकर जा रहे हैं।)

एक डाकू– हम लोगों को दो लाख मिल गये।

दूसरा डाक– आज का दिन बहुत अच्छा रहा, आज बड़ा लाभ हुआ।

एक डाकू– लेकिन रुपये मुँह माँगे मिले।

तीसरा डाकू– इसमें कोई राज न हो।

(एकाएक सेना आकर झपट पड़ती है और डाकुओं को पकड़ लेती है। अँधेरा होता है। प्रकाश होने पर वाचक आते हैं।)

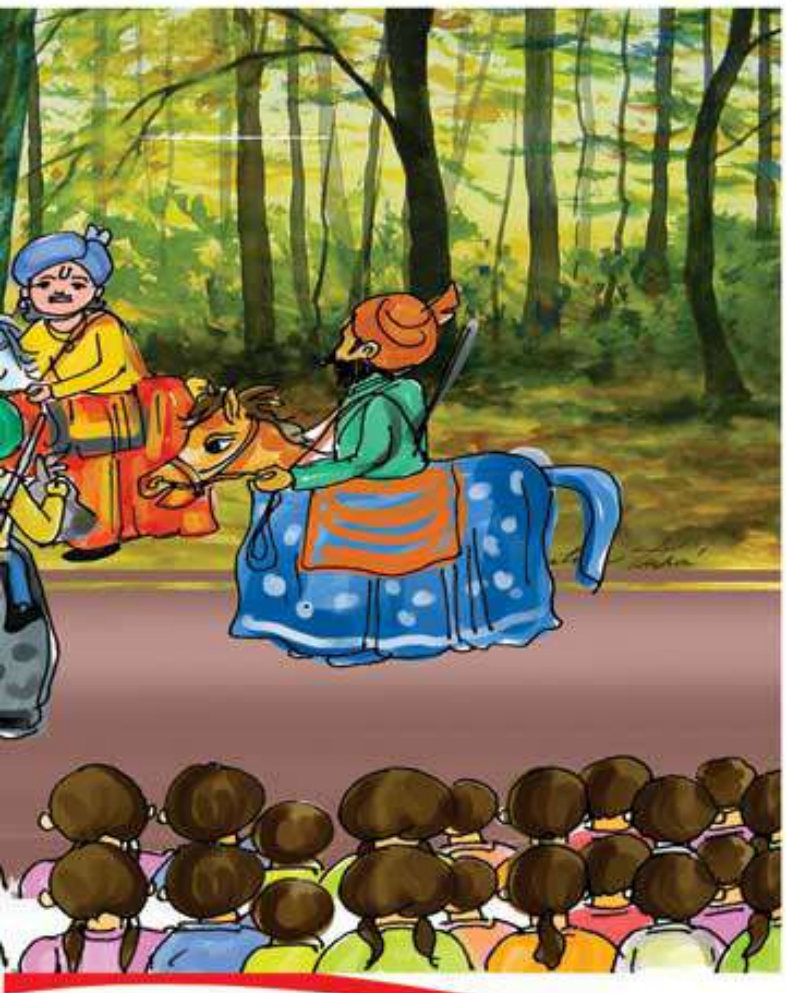

एक वाचक– (लावणी)
पकड़ गये ऐसे ये डाकू बेड़ी में जकड़े थे।
दूसरा वाचक– (लावणी)
बड़े दुष्ट थे डाकू जो आफत में स्वयं पड़े थे।
एक वाचक– (लावणी)
गये जेल में और लौटकर राजा घर आये।
दूसरा वाचक– (लावणी)
रानी मन में हुई मगन, राजा खुशियाँ लाये।

(अँधेरा वाचक जाते हैं, प्रकाश होता है, राजा–रानी बात कर रहे हैं।)

रानी– आपको डाकुओं ने सताया बहुत,
मुझको सचमुच हृदय में हुआ दुख बड़ा।
किस घड़ी में गये कष्ट जो इस तरह,
डाकुओं की वजह से यहाँ आ पड़ा।
राजा– किन्तु सब ठीक है अब, हुआ सो हुआ
बात मन में मगर एक है आ रही,
जो न आती सिलाई, न आता हुनर,
हाल होता बुरा, बुद्धि चकरा रही।
किन्तु दी राय तुमने, बनाया गुणी
सीख ली जो सिलाई, बचे प्राण यों।
तुम हो विदुषी बड़ी औ' समझदार हो।
जैसे मेरे लिए तो पुरस्कार हो।

(दोहा)
करूँ बढ़ाई क्या अधिक, धन्य हुआ मैं आज।
धन्य महल है धन्य है, मेरा सारा राज।।

(लावणी)
हुनर है हुनर, कहें क्या हम ? बिना कुछ कहें रहे क्या हम ?
पास में सबके हुनर रहे, नहीं दुःख कोई कहीं सहे।
हुनर है हुनर, कहें क्या हम, बिना कुछ कहे रहे क्या हम ?

राजा रानी– हुनर है, हुनर कहें क्या हम ?
बिना कुछ कहें... ?

(रानी–राजा को देख रही है। चेहरे पर प्रसन्नता है। राजा के चेहरे पर भी प्रसन्नता झलक रही है।)

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

जंपी की टॉफियाँ

चित्रकथा: देवांशु वत्स

मैं यह कप लेने आया था। जंपी को भी भेज दीजिएगा...
कुछ देर बाद...
मां, वो कप कहां गया?
उसे तो डप्पू ले गया!
क्या?
???
वाह! कप ले आए...
हां, जंपी नहा रहा था।
अरे! अंदर यह क्या है?
टॉफियां
टॉफी!
मजा आ गया!
जियो जंपी!
लाजवाब!
हाय! मेरी टॉफियां!

अपने हिस्से का सुख

– मधु गोयल

रामप्यारी नहीं चाहती थी कि उसकी बेटी कुनीका उसकी तरह गरीबी में जीवन व्यतीत करें। कुनीका पढ़ाई में अच्छी थी। दूसरे बच्चों को अच्छे विद्यालय में पढ़ता हुआ देखकर उसकी इच्छा जागी, कि उसकी बेटी 'कुनीका' भी अच्छे विद्यालय में पढ़े। और नाम रोशन करें। उसने अपनी बेटी कुनीका का एक बड़े विद्यालय में प्रवेश करवा दिया। इस इच्छा को पूरी करने के लिए वह सारे समय घरों में काम करती और अपनी सारी कमाई बेटी पर खर्च कर देती।

लेकिन कुनीका इस बात से परेशान रहती कि उसको विद्यालय में बच्चे नौकरानी की बेटी कहकर चिढ़ाते। कुछ दिनों तक तो ऐसा चलता रहा, फिर एक दिन रामप्यारी की बेटी कुनीका ने अपनी माँ से प्रश्न किया.. ''माँ हम गरीब हैं, फिर तूने सूरज कन्या पाठशाला से नाम हटाकर बड़े विद्यालय में प्रवेश क्यों करवाया, रहूँगी तो मैं नौकरानी की बेटी।''

''हम गरीब कहाँ हैं... किसने कहा?''

''माँ! तू कुछ भी कह लें, लेकिन तेरा दिल भी जानता है कि हम गरीब हैं, सारा पैसा मेरे ऊपर खर्च कर देने से क्या प्राप्त होगा, विद्यालय में आकर देख तो सही सब बच्चे कितने अच्छे से आते हैं। उनको देखते ही बनता है, इनमें कुछ तो खास है।

मैं अपने आप में हीनता अनुभव करती हूँ। मुझसे कोई मित्रता भी नहीं करता। तू सारा पैसा मेरे ऊपर लुटा भी देगी... तब भी मैं 'उन जैसी' नहीं दिख सकती और मैं उन सब में मिल भी नहीं सकती।''

''किस माँ का मन नहीं होता कि उसका बच्चा, अच्छे विद्यालय में पढ़े, पढ़-लिखकर होशियार बने, अच्छे- पद पर नौकरी करें। एक दिन सब ठीक हो जाएगा।'' माँ ने समझाते हुए कहा।

''क्या ठीक हो जाएगा, खाने में कोई पास्ता लाता है, कोई पिज्जा लाता है, सब तरह-तरह के व्यंजन लाते हैं। और एक मेरी माँ मुझे प्रतिदिन दाल-रोटी देती है। मुझे नहीं खाना रोज की रोज दाल रोटी।'' कुनीका ने नाराजगी जाहिर की। पता है सब बच्चे मुझे छेड़ते हैं और नाच गाकर कहते हैं- ''दाल रोटी खाओ, प्रभु के गुण गाओ।''

''बच्चे ऐसा बोलते हैं?'' ''हाँ, मुझे अच्छा नहीं लगता, और कुछ बच्चे तो... डब्बा साफ करने के लिए बोलकर हँसते हैं।''

माँ ने प्रश्न किया, ''बेटी! इस बाबत तुमने शिक्षक को नहीं बताया?''

''नहीं, ऐसा करने पर कक्षा के साथी मुझसे बैर करेंगे, यह मेरी लड़ाई है, मैं स्वयं देखूँगी।''

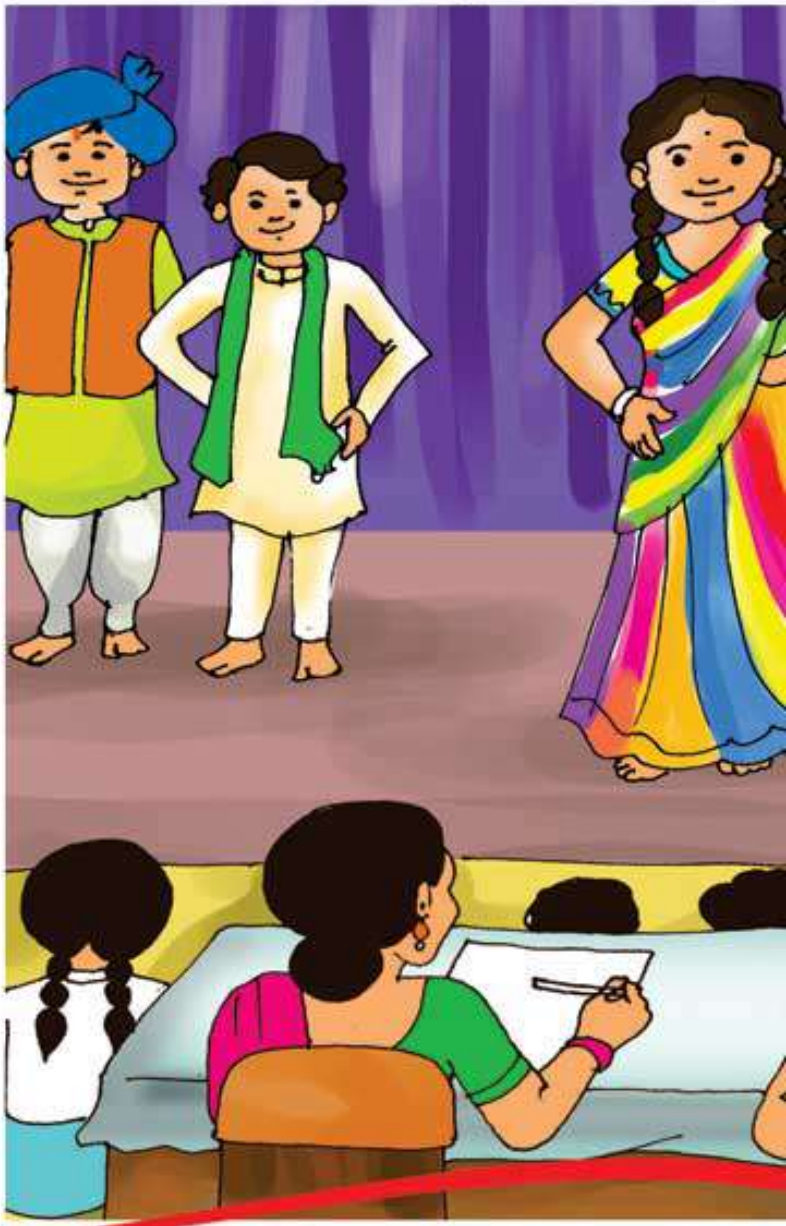

''बेटी! दाल-रोटी से अच्छा तो कोई भोजन नहीं होता, वह क्या कहते हैं उसे.. हाँ.. फास्ट फूड। यह सब शरीर के लिए हानिकारक है।''

''माँ! तू भी हर बात को अपनी कसौटी पर कसने में पक्की है। बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी कर लेती है, मेरी जगह अपने-आपको रख, तो पता चलेगा, रही जग में नाम उज्ज्वल करने की तो मेरे भाग्य में जो लिखा होगा वही तो मैं बनूँगी। क्या पता मेरी किस्मत में 'चौका-बर्तन' ही लिखा हो।''

''ऐसा कह मेरे हृदय को ठेस मत पहुँचा। ये दुनिया सुखों से खाली नहीं है। हाँ! सबके हिस्से में अलग-अलग सुख अवश्य है। हमारे हिस्से का सुख हमारे पास आएगा, भगवान के घर देर है, अँधेर नहीं।''

''पता नहीं माँ! वो दिन कब आएगा? रोज तू

मुझे ऐसे ही समझा-बुझाकर शांत कर देती है।''

विद्यालय में विचित्र वेश-भूषा (फैंसी ड्रेस) प्रतियोगिता थी, सब बच्चों को फैंसी ड्रेस में आना था और अपनी-अपनी पोशाक के बारे में अपने शब्दों में बोलना भी था।

इस बारे में कुनीका ने माँ को बताया, और कहा- ''अब बोल तू कैसे व्यवस्था करेगी, इन विद्यालयों में हर त्योंहार मनाया जाता है, बड़े विद्यालयों की बड़ी बातें। तू चिंता मत कर बेटी, मैं सब मैनज कर लूँगी।''

''मैनज नहीं मैनेज।''

''हाँ-हाँ वही-वही, बस तू अच्छा प्र-जे-टशन दियो।'' हँसते हुए.. ''प्रेजेंटशन नहीं... मेरी माँ.. प्रेजेंटेशन।'' ''हाँ-हाँ वो ही... वो ही, तेरे साथ रह कर मैं धीरे-धीरे सब सीख जाऊँगी।''

''हाँ, अब काम की बात करते हैं, मुझे सिलाई बहुत अच्छे से आती है, मैं बनाऊँगी तेरे लिए फैंसी ड्रेस। बस तू अच्छा-सा प्रेजेंटेशन दे देना। अरे वाह एक ही बार में सीख गई मेरी माँ। रामप्यारी ने काम से छुट्टी लेकर रात-दिन एक कर, अपनी पुरानी, साड़ियों से रेनबो के ऊपर एक 'लाँग फैंसी ड्रेस' तैयार की, ड्रेस बहुत ही सुंदर बनी। उस ड्रेस को देखने से ही लग रहा था जैसे इंद्रधनुषी छटा बिखेर रही हो।

कुनीका ने वह ड्रेस पहन कर देखी, वह अपने आप में फूली नहीं समा रही थी।

माँ ने कहा- ''बेटी प्रेजेंटेशन की तैयारी कर लो, अब यह काम तुम्हारा।''

कुनिक अचानक बोली- ''बरसात के बाद रंग-बिरंगा इंद्रधनुष देखकर कितनी खुशी मिलती है..।'' और दोनों माँ-बेटी हँसने लगी।

विद्यालय में शनिवार को फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता करवाई गई, रंग-बिरंगी पोशाक पहनकर प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चे आकर्षित कर रहे थे। सब बच्चे तरह-तरह की ड्रेस पहनकर शिक्षक का मन लुभा रहे थे। आयोजित प्रतियोगिता में बच्चों को बोलना भी

था। इस अवसर पर सभी ने दिल से भाग लिया और अपने-अपने शब्दों में बोला, सभी के लिए तालियाँ बज रही थीं। कुनीका रेनबो ड्रेस पहने चुपचाप खड़ी थी।

यह देख, प्राचार्य दीदी ने कुनीका से कहा- ''आगे बढ़ो.. खड़ी क्यों हो?''

कुनिका सकुचाती आगे बढ़ी और कहा- ''दीदी! इंद्रधनुष के नाम से सभी परिचित हैं, आकाश में संध्या समय, पूर्व दिशा में तथा प्रात:काल पश्चिम दिशा में, वर्षा के पश्चात लाल, पीला, हरा, आसमानी, नीला, तथा बैंगनी एक विशालकाय अर्धवृत्ताकार कभी-कभी दिखाई देता है यह इंद्रधनुष कहलाता है। मेरी यह ड्रेस 'रेनबो' को दर्शाती है। इतना कह अपनी ड्रेस के घेर को कुछ ऊपर उठाती-लहराती हुई आगे बढ़ गई। सभी अध्यापकों ने कुनिका के लिए तालियाँ बजाईं, कुछ बच्चे कुनिका के लिए तालियाँ बजा रहे थे और कुछ मुँह बना रहे थे।

कुनिका को प्रथम घोषित किया गया, कुनिका बहुत प्रसन्न थी, उसकी माँ की मेहनत सफल हो गई। सब बच्चे अपनी-अपनी कक्षा में आ गए। कुछ बच्चों ने कुनिका से दोस्ती का हाथ बढ़ाया।

कुनिका ने अपनी कक्षा में अपने लिए जगह बनाई। दीदी ने कक्षा में आने पर कुनिका को अपने पास बुलाया और कहा- ''बेटा! छोटा-बड़ा कोई काम नहीं होता, छोटी-बड़ी तो हमारी सोच होती है।'' मुझे आशा है कि तुम अपनी माँ का सपना पूरा करोगी।

''इंसान अपनी श्रेष्ठता यदि अपने कार्य से दे तो यही उस इंसान की श्रेष्ठता है। '' किसी काम को कम मानना सही नहीं, बस मेहनत और ईमानदारी से काम करना बहुत आवश्यक है।''

दीदी ने पीठ थपथपाते हुए, जाओ, ''अपने स्थान पर बैठो।'' कुनिका बहुत प्रसन्न थी, घर पहुँचकर कुनिका ने खुश होते हुए, यह सब अपनी माँ को बताया। माँ ने कहा बेटी- ''मैंने कहा था न कि एक दिन सब ठीक हो जाएगा, आज मुझे लग रहा है, कि तू मेरा सपना अवश्य पूरा करेगी।''

''माँ! यह जीत मेरी नहीं यह जीत तेरी है।'' माँ ने प्रसन्न होकर, कुनिका बेटी को गले लगा लिया।

- गाजियाबाद (उ. प्र.)

बढ़ता क्रम 08

देवांशु वत्स

1. 'होना' का संभावना सूचक शब्द।
2. शर्त, बाजी।
3. आधुनिक ढंग का विश्राम स्थान।
4. अच्छे लक्षणों वाला, भावी।
5. अक्ल खोना, घबड़ा जाना।
6. होली जलाना।

1. हो					
2. हो					
3. हो					
4. हो					
5. हो					
6. हो					

उत्तर: 1. हो, 2. होड़, 3. होटल, 4. होनहार, 5. होश उड़ना, 6. होलिका दहन।

कौआ और बिल्ली

– बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

एक दिन एक कौआ एक पेड़ की डाल पर बैठ कर रोटी खा रहा था। तभी एक बिल्ली वहाँ पेड़ के नीचे आई कौए को रोटी खाते देखकर बोली– ''कौए भाई! आज तो गजब हो गया। कल तो आप हमें दूध की तरह सफेद दिखाई दे रहे थे। आज आप का रंग काला कैसे हो गया?''

कौआ बिल्ली की बात सुनकर विचार में पड़ गया। तभी बिल्ली बोली– ''कौए भाई! इसमें विचार और चिंता करने की कोई बात नहीं है। तुम अभी जाकर सामने बहती नदी में नहा लो तो तुम्हारा काला रंग फिर से एक दम सफेद हो जाएगा।''

कौआ बिल्ली की बातों में आकर रोटी लेकर बिल्ली के पास आकर बैठ गया। और बोला– ''बिल्ली मौसी! मैं जब तक नदी से नहाकर वापस नहीं आ जाऊँ तब तक तुम यही रहना मेरी रोटी खाकर भाग न जाना।''

''नहीं नहीं! कौए भाई! मैं ऐसा नहीं करूँगी। जब तक तुम नदी से नहाकर यहाँ नहीं आ जाओगे मैं तब तक कहीं नहीं जाऊँगी।''

बिल्ली की बात सुनकर कौआ नहाने के लिए नदी के तट पर चल दिया। बिल्ली कौए को मूर्ख बनाकर मन ही मन बहुत प्रसन्न हुई। फिर सारी रोटी चट पट खाकर वहाँ से नौ–दो ग्यारह हो गई।

कौआ नदी से नहाकर जब वापस वहाँ पेड़ के पास आया तो देखा कि बिल्ली और रोटी का कहीं अता–पता नहीं था। तभी पेड़ पर बैठी गिलहरी बोल पड़ी– ''कौए भाई! तुम्हें तो बिल्ली ने खूब मूर्ख बनाकर तुम्हारी सारी रोटी खाकर नौ–दौ ग्यारह हो गई। नदी में नहा लेने से भला काले से कोई गोरा हो सकता है। तुम इतने चालाक होकर भी मूर्ख बन गए।''

गिलहरी की बात सुनकर कौआ अपनी मूर्खता पर मन ही मन पछताने लगा।

– गोरखपुर (उ. प्र.)

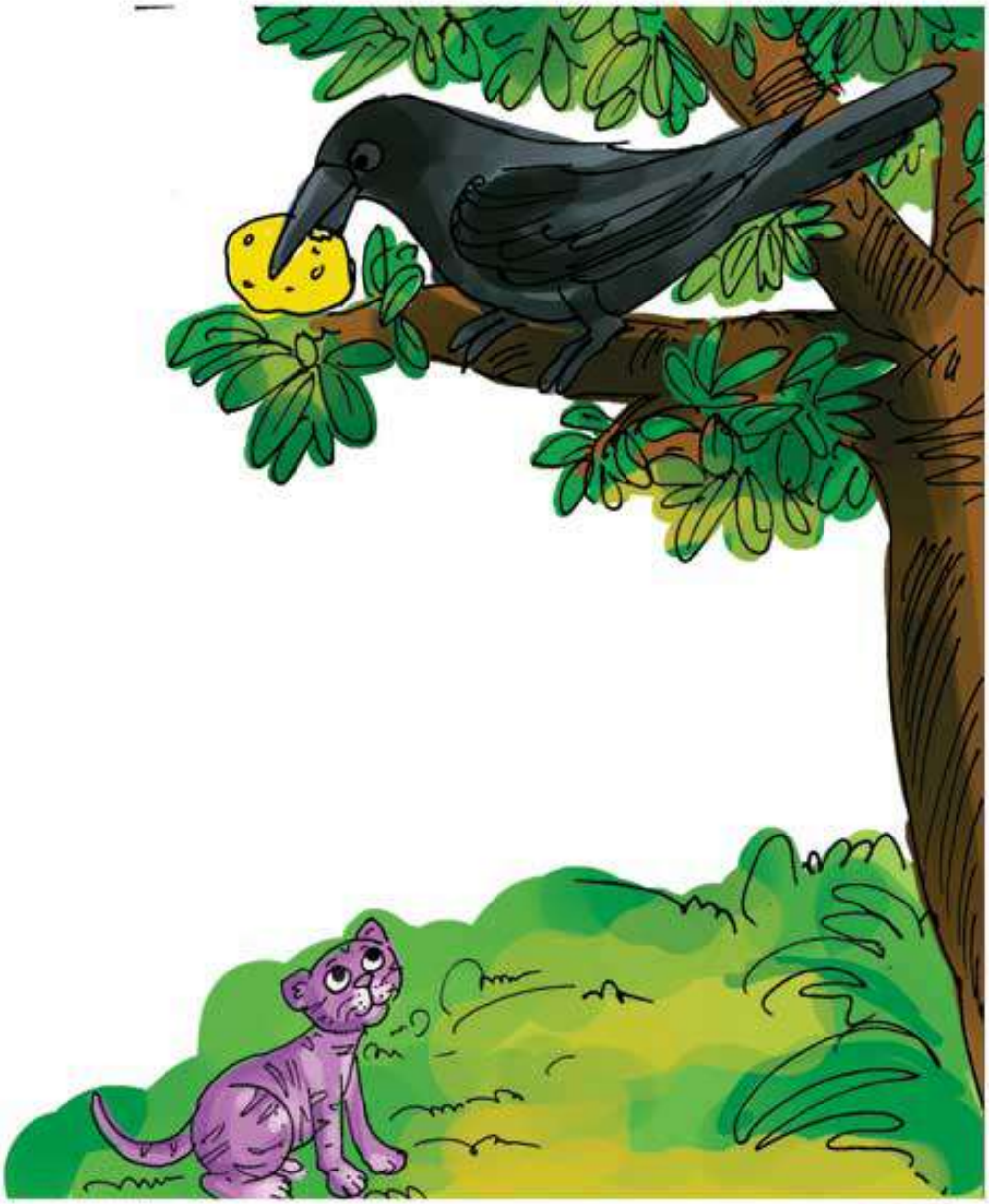

थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी (३)

मरते-मरते बचा

– डॉ. मनोहर भण्डारी

एक दिन रामू और मोहन अपने दवाखाने में बैठे थे। इतने में गाँव की एक औरत भूरी बाई आई। भूरी बाई ने बताया कि उसके छोटे लड़के को खूब दस्त लग रहे हैं। तीन-चार दिन से वह लगातार दिन में सात-आठ बार पतले दस्त कर रहा है।

मोहन ने कहा– ''भूरी मौसी पहले दिन ही उसका उपचार कराना था।''

भूरी मौसी ने कहा– ''मेरी सास ने कहा था कि इसके दाँत निकल रहे हैं। इसलिए दस्त लग रहे हैं। उसको घरेलू दवा भी दी पर कोई लाभ नहीं हुआ।''

मोहन ने कहा– ''चलो तुम्हारे घर चलते हैं।'' मोहन वहाँ गया। उसने लड़के की जाँच की। लड़का बहुत कमजोर हो गया था। शरीर की चमड़ी का लचीलापन कम हो गया था। सिर का तालू नीचे धंस गया था। जीभ और ओठ सूखे थे। इसका अर्थ यह था कि लड़के के शरीर में पानी की बहुत कमी हो गई थी।

मोहन ने भूरी मौसी को कहा कि– ''इसकी स्थिति बहुत खराब है। इसको दवा के साथ ही जीवन रक्षक पानी का घोल और चाय खूब दो।'' भूरी मौसी ने पूछा– ''जीवन रक्षक पानी का घोल क्या होता है?'' मोहन ने बताया– ''एक लीटर (चार गिलास) पीने का पानी उबाल लो। ठंडा होने पर उसमें चार छोटे चम्मच शहद या शकर, एक चुटकी नमक तथा आधे नींबू का रस डाल दो। इसे अच्छी तरह हिलाकर मिला लो। इस तरह जीवन रक्षक पानी का घोल तैयार हो जाएगा।'' भूरी मौसी ने पूछा– ''उस घोल का क्या करना होगा?''

मोहन ने कहा– ''यह पानी थोड़ा-थोड़ा करके हर पाँच मिनट में देती रहना। दिनभर में एक लीटर पानी लड़के को पिलाना है। दो-तीन बार चाय भी देना।'' मोहन ने आगे बताया– ''बच्चे की टट्टी ठीक प्रकार से साफ करना। साबुन से हाथ धोना। जो दवा में तुमको दे रहा हूँ; वह बराबर देते रहना।''

भूरी मौसी ने पूछा– ''यह दूध पीता है, क्या दूध पिलाना बंद कर दूँ?'' मोहन ने कहा– ''उसे दूध पिलाना बंद मत करना। दूध पिलाती रहना।'' भूरी मौसी ने पूछा– ''उसे फिर कब दिखाने लाऊँ?'' मोहन ने कहा– ''आज संध्या को मैं स्वयं इसे देखने आऊँगा। यदि लाभ नहीं हुआ तो किशनगढ़ जाना पड़ेगा।'' दो दिन तक मोहन सुबह-शाम भूरी मौसी के लड़के को देखने गया। लड़के को आराम था। चार-पाँच दिन में वह भला चंगा हो गया।

(आगे अगले अंक में)

– इन्दौर (म. प्र.)

न्याय

– डॉ. उमेश चन्द्र नैथानी

हर्षिल वन में सब ठीक–ठाक चल रहा था। राजा शेरसिंह दयालू एवं न्याय प्रिय थे। उनके राज्य में एक चालाक बंदर चिम्पू भी रहता था। चिम्पू ने एक दिन गुपचुप तरीके से अपने घर में अधिकांश जानवरों को बुलाया और बैठक में बोला– ''मेरे साथियो! आप सभी जानते हैं पिछले कई वर्षों से जंगल में राजा शेर सिंह राज करते चले आ रहे हैं। यह जंगल हम सबका है राजा की कुर्सी पर एक ही जानवर का अधिकार क्यों हो ? मैं चाहता हूँ सबको क्रम से राजा बनने का अधिकार मिलना चाहिये।''

गज्जू हाथी बोला– ''लेकिन सदियों से चलने वाली इस प्रथा को हम कैसे बदल सकते हैं ?''

रोजी घोड़ी ने कहा– ''आखिर आजकल जैसा चल रहा है वह ठीक ही तो है।''

चालाक फौक्सी लोमड़ी को बंदर चिम्पू ने पहले से ही राजा के विरुद्ध तैयार कर रखा था। फौक्सी बोली– ''चिम्पू ठीक कह रहा है। जंगल के लिए हम सब का योगदान रहता है। जब सब ठीक ढ़ंग से इतनी मेहनत करते हैं तो क्रम से हर एक को राजा की कुर्सी मिलनी चाहिए।''

लोमड़ी की बातों से अधिकतर जानवरों के मुँह में पानी आ गया और सब एक सुर में बोल पड़े– ''ठीक है एक वर्ष के लिये सबसे पहले चिम्पू बंदर को ही राजा बनाया जाये।''

राजा शेर सिंह ने समझदारी से काम लिया और सभी जानवरों से बोले– ''ठीक है! मुझे आप लोगों का निर्णय स्वीकार है।''

चिम्पू बंदर हर्षिल वन का राजा बन गया। कुछ दिनों के बाद जंगल में एक समस्या निर्मित हो गई। हुआ यह कि रौक्सी भालू का चार वर्ष का बच्चा कोई उठाकर ले गया। रौक्सी ने सभी जानवरों से मिलकर सारा जंगल छान मारा पर बच्चे का कहीं पता नहीं चला।

सभी जानवरों ने निर्णय लिया कि राजा के सामने जाकर समस्या को बताएँगे ताकि वे कोई निर्णय लेकर रौक्सी की सहायता कर सकें।

दोपहर का समय था। सभी जानवर राजा चिम्पू के दरबार में थे। गज्जू हाथी बोला– ''महाराज! रौक्सी का बच्चा पिछले पाँच दिनों से नहीं मिल रहा है। लगता है कोई उसे उठाकर ले गया है।''

रोजी घोड़ी ने कहा– ''महाराज! आज रौक्सी भालू का बच्चा गायब हुआ है, कल किसी और का भी हो सकता है। आप जल्दी निर्णय लें और बच्चे की खोज करवाइएँ।''

चिम्पू राजा– ''चिन्ता मत करो। मैं कुछ सोचता हूँ।''

चिम्पू ने बिना समय गंवाए एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलाँग लगानी शुरु कर दी। वह लगातार छलाँग लगाए जा रहा था। आधे घँटे से ऊपर जब हो गया तो गज्जू हाथी ने जोर से कहा– ''महाराज! आप हमारी समस्या तो सुन नहीं रहे हैं ऊपर से छलाँग पर छलाँग

लगाये जा रहे हैं।''

चिम्पू राजा– ''गरम क्यों होते हो? तुम सब देख रहे हो कि मेरे प्रयास में कोई कमी नहीं है। मैं अपना काम कर तो रहा हूँ।''

गज्जू हाथी ने रोजी घोड़ी से चिल्लाकर कहा– ''रोजी देखा मैं पहले ही कहता था कि जंगल का राजा शेर ही होता है जो निर्णय लेना जानता है।''

राजी बोली– ''इस बंदर को भगाओ और फिर से राजा शेर सिंह को कुर्सी पर बैठाओ।''

सभी जानवर सोच रहे थे हमसे कितनी बड़ी भूल हुई। आखिर सही कुर्सी पर बैठकर सही पात्र ही न्याय कर सकता है।

– देहरादून (उत्तराखण्ड)

समाचार

'बाल विश्व' का विमोचन

भोपाल। आरंभ चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में मुक्त छंद साझा बाल काव्य संकलन 'बाल विश्व' का विमोचन देशभर से आए हुए प्रबुद्ध रचनाकारों, गणमान्य अतिथियों, बाल साहित्यकारों, हिन्दी प्रेमियों की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। इस साझा संकलन में देश–विदेश के २१ रचनाकर उपस्थित थे।

डॉ. परशुराम शुक्ल, शोभा ठाकुर, बिंदु त्रिपाठी, कमल चंद्रा, शेफालिका श्रीवास्तव, श्यामा गुप्ता दर्शना, उषा सोनी, मधुलिका सक्सेना, ऊषा चतुर्वेदी, किरण खोड़के, माया दुबे, शोभा भिसे, (भोपाल) मधु श्रीवास्तव, (मुंबई), साधना मिश्रा (लखनऊ), सूर्यकांत सूर्या, (तंजानिया), नीलिमा दुबे, (कर्नाटक), पद्मा चौगांवकर, (विदिशा), रश्मि प्रभा, (मुंबई), आशीष जैन, (जबलपुर), यशोधरा भटनागर, (देवास), और अनुपमा अनुश्री। साथ ही इसमें दो बाल रचनाकार भी शामिल है आद्या भारती, भोपाल और आरोही व्यास, इन्दौर और अंतिम आवरण पर पेंटिंग है काव्या किरार, कक्षा ६ गुना, मध्यप्रदेश की।

बाल मनोविज्ञान, जिज्ञासा, बाल अभिरुचियों वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समसामयिक परिदृश्य, बालमन और उसका परिवेश, परिवार, प्रकृति, खेलकूद, बाल गतिविधियाँ देशभक्ति, उत्कृष्ट जीवन मूल्य, सही जीवन शैली को समेटे, मनोरंजक शैली में ज्ञान वर्धन और संस्कारित करता हुआ यह साझा बाल काव्य है।

संकलन का विमोचन करते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष 'डॉ. प्रेम भारती' ने अपने वक्तव्य में कहा– ''पुस्तक लेखन के साथ–साथ प्रकाशन भी हो लेकिन उसका पठन–पाठन भी बच्चों के बीच बहुत आवश्यक है।''

गधे से दूरी

– तपेश भौमिक

इन दिनों महाराज कृष्णचंद्र गोपाल से नाराज रहने लगे थे। इन्हीं दिनों एक दिन ऐसा हुआ कि दरबार में गोपाल महाराज के निकट ही बैठा था। तभी उसने इशारों–इशारों में एक दरबारी को कुछ कहने लगा। मंत्री ने यह बात देख ली। वह हमेशा इस अवसर की तलाश में रहता था कि कैसे गोपाल को नीचा दिखाया जाए। बस क्या था? इशारों ही इशारों में उसने महाराज को यह बता दिया कि गोपाल दरबार के अनुशासन को भंग कर रहा है।

महाराज आग बबूला हो गए। उन्होंने क्रोध में चिल्लाते हुए कहा– ''गोपाल! तुम अपने आपको क्या समझते हो? इस दरबार में तुम्हीं केवल बुद्धिमान हो? तुम पहले दर्जे के गधे हो।''

''जी महाराज! मैं कहाँ अपने आप को बुद्धिमान मानता हूँ। मैं तो.....।'' गोपाल ने हाथ जोड़कर मिमियाते हुए कहा।

''क्या तुम जानते हो कि एक गधे और तुममें कितनी दूरी है?'' महाराज ने क्रोध से काँपते हुए कहा।

''जी हाँ महाराज! जी... जी! क्यों नहीं! केवल साढ़े चार हाथ की ही तो दूरी है...।'' गोपाल ने रुक–रुककर विनयपूर्वक कहा।

''सो कैसे ?'' महाराज ने दाँत किट-किटाते हुए कहा।

''आप किसी से भी नपवा लीजिए आपके और मेरे बीच की दूरी, वह हर हाल में साढ़े चार हाथ ही होगी। आप मेरे माई-बाप हैं।'' गोपाल ने आत्म विश्वास के बड़ी शांति से कहा।

अब महाराज का झेंपू चेहरा देखते ही बन रहा था। वे अंगोछे से बार-बार पसीना पोंछने लगे। फिर वे उठकर गुस्से से पैर पटकने लगे। ऐसा करते हुए उनके उस पैर में मोच आ गई। वे आगे बढ़ने का प्रयत्न करने लगे तो लंगड़ाने लगे। इस पर दरबार में चुप्पी छा गई।

लेकिन मंत्रीजी अपनी हँसी बहुत प्रयत्न करने के बाद भी रोक नहीं पाए। वे खीं-खीं कर हँसने लगे। उनकी हँसी के साथ-साथ सारे दरबार में हँसगोले फूटने लगे। अब मंत्रीजी की ओर महाराज ने क्रोध से ऐसे घूरा कि उनकी घिग्घी बँध गई।

मंत्रीजी ने केवल यह कहा- ''क्षमा कीजिएगा महाराज! मैं गोपाल की बेवकूफी भरी बातें सुनकर अपनी हँसी रोक नहीं पाया था।''

''मंत्रीजी! तुम्हें बार-बार चेतावनी देता हूँ कि गोपाल को छोटा दिखाना बंद करो। आज तुम्हारे कारण मेरे पैरों में मोच आ गई। गोपाल का कोई दोष ही नहीं था, सारे विवाद की जड़ तुम ही हो।''

अब गोपाल मंत्री की ओर देखते हुए मुँह बनाने लगा था। उसे देखकर महाराज हँस पड़े। महाराज का सारा क्रोध जाता रहा।

- गुड़ियाहाटी,
कूचबिहार (पं. बंगाल)

कविता

जल संरक्षण

- दिनेश विजयवर्गीय

देख सूरज के तीखे तेवर,
तपने लगी है धरती।
लगे सूखने कुएँ बावड़ी,
कम जल नदिया तरसी।।
फैंक रहे हैं हवा हैंडपंप,
बीत गया धरती का जल।
नलकूप भी फेल हो रहे,
जीवन कठिन हुआ आजकल।।
नहीं दूर तक वन में पानी,
वहाँ जीवों की दुखद कहानी।
धीमी हुई उनकी तन चुस्ती,
बरसेगा नहीं जब तक पानी।।
शुद्ध रखे जल स्रोतों को,
दूषित हो न वहाँ का जल।
सब मिलकर करें यह संकल्प,
तब होगा जल गंगा जल।।
पर्यावरणविद् हमें बताते,
जल का करे संरक्षण,
होगा नहीं तो जीवन दूभर,
तरसेगा जल बिन जन-जन।।

- बूँदी (राजस्थान)

ये भी जानिए

प्रस्तुति • राजेश गुजर

वाद्ययंत्रों के बारे में जानिए जिनका उद्भव भारत में हुआ है।

वीणा- इसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत में होता है। यह एक तत् वाद्य यंत्र है। शिवपुराण के अनुसार नारदजी की साधना से प्रसन्न होकर शिवजी ने उन्हें संगीत कला प्रदान की और वीणा का निर्माण किया। शिव प्रदोष स्तोत्र में उल्लेखित है कि जब शूलपाणि शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की तो सरस्वती ने वीणा, इंद्र ने वेणु, ब्रह्मा ने करताल और विष्णुजी ने मृदंग बजाया।

ढोलक- यह एक प्रमुख ताल वाद्य है। प्राचीन काल में ढोलक आदि को पटह कहा जाता था। पहले के समय में बड़े-बड़े ढोलों का उपयोग युद्ध के समय, जंगली जानवरों को भगाने के लिए या कोई बात लोगों तक पहुंचाने के लिए किया जाता था। ढोलक का निर्माण आम, शिशम, सागौन और नीम आदि की लकड़ी से होता है।

सारंगी- सारंगी की परिकल्पना 'रावणास्त्र' तथा 'रावण हस्त वाणी' से हुई है। संगीत शास्त्रों में इसका प्रथम उल्लेख 'संगीत राज' में प्राप्त होता है। 'पीनाक वीणा' में वीणा वादक की स्थिति ऐसी बन जाती है जैसे कोई धनुषधारी धनुष लेकर बैठा हो। इसी वीणा को बाद में सारंगी कहा गया है।

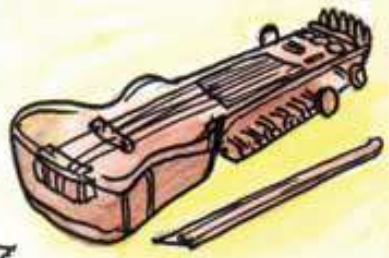

जलतरंग- 'संगीत-पारिजात' में इसे घन वाद्य के अंतर्गत माना गया है। जल तरंग का प्रयोग अन्य स्वर वाद्यों के अनुरूप राग के अंतर्गत गीत के वादन के लिए होता है। मध्य युग के आस पास जल तरंग का विकास हुआ। इसके प्याले सामान्यतः चीनी-मिट्टी के होते हैं।

मृदंग- प्राचीन मृदंग तीन भागों में होता था। उसका एक भाग गोद में रहता था तथा दूसरा भाग सामने उर्ध्वमुखी (ऊपर की दिशा में) रखे जाते थे। छठी-सातवीं शताब्दी में मृदंग के तीनों भागों में परिवर्तन होने लगा। अंत में उसका वह उर्ध्वमुखी भाग भी हट गया और उसका गोद वाला भाग ही मृदंग या मंदल के नाम से प्रचलित रह गया।

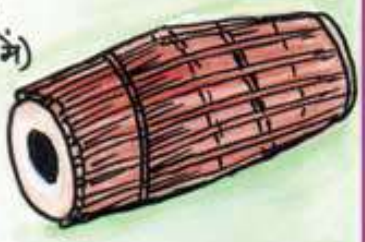

लेफ्टीनेंट कर्नल जगन्नाथरावजी चिटणीस

घटना १९५६ के मई-जून की है नागा पहाड़ियाँ उग्रवादियों के घोर संकट से ग्रस्त थीं। भारतीय सेना की १/३ गोरखा राइफल्स कर्नल चिटणीस के नेतृत्व में इस विद्रोह का सामना कर रही थी। इसी तारतम्य में १४ जून १९५५ को वे आठ जीपों का काफिला बनाकर मोकोकचुआंग से जून्हे बोरो की ओर जा रहे थे कि लगभग सौ नागा विद्रोहियों ने काफिले के बीच वाले भाग पर अचानक आक्रमण कर दिया। ले. कर्नल चिटणीस सहित चार सैनिक घायल हुए और तीन जीपें अपने बाकी काफिले से बिछुड़ भी गईं। ले. कर्नल ने बाकी पाँच जीपों को रोका और संघर्ष के लिए तैयार हो गए। अभी २०० गज की दूरी ही तय हो सकी थी कि स्वचालित मशीनगनें गरज उठीं। विद्रोही जिस बंकर से आक्रमण कर रहे थे वह मात्र १५० मी. दूर था। कुशल नेतृत्व करते हुए साहसी ले. कर्नल आगे बढ़े और एक उग्रवादी को मार गिराया दूसरे को धूल चटा दी। लेकिन एक अन्य की लाइट मशीनगन की गोलियाँ ले. कर्नल के पैरों में धँस गईं लेकिन इस महान योद्धा का शत्रु पर आक्रमण थमा नहीं। वे बहुत घायल थे पर लड़ रहे थे कि एक गोली उनके पेट में लगी वे दुश्मन की चौकी से पन्द्रह मीटर की दूरी पर गिर पड़े। लेकिन यह घायल सिंह अपनी दहाड़ से दुश्मन को दहला रहा था और अपने साथियों की हिम्मत बढ़ा रहा था इस प्रकार कि वह चौकी ही ध्वस्त नहीं हुई तो २० उग्रवादी भी नर्कवासी हो गए।

२० अगस्त १९९८ को महाराष्ट्र के सनारा में जन्मा यह वीर सपूत गोरखा राइफल का सिपाही बना था २ अप्रैल १९४२ को। पूरा नाम था लेफ्टीनेंट कर्नल जगन्नाथराव जी चिटणीस। पिता श्री रावजी गोपाल चिटणीस ने देखा कि उनका यह रणबांकुरा लाल शीघ्र ही अपनी बटालियन का हिस्सा ही नहीं उसका योग्य प्रशिक्षक भी बना था। अतुल्य साहस की प्रतिभा श्री चिटणीस को मरणोपरांत 'अशोकचक्र' से सम्मानित किया गया।

-

विश्व योग दिवस - २१ जून

दोहे योग ढले

- डॉ. रानी कमलेश

मानव जीवन योग से,
रहे सदा निरोग।
ऋषियों-मुनियों ने दिया,
कल्याणक संयोग।।
योगी के सान्निध्य से,
मिले योग का ज्ञान।
भारत की यह सम्पदा,
जिस पर है अभिमान।।
जीवन जीना सीख लें,
कर कर नित-नित योग।
बने रहे यदि आलसी,
लग जायेंगे रोग।।
धर्म नहीं बाधा बने,
करे कोई भी योग।
सच्चे मन से जो करें,
मिट जाते हैं रोग।।

- हापुड़ (उ. प्र.)

सरल विज्ञान

प्रस्तुति- संकेत

तुम जब भी कुछ पसंदीदा खाते हो वह भोजन किसी समूह विशेष का होता है या तो उसमें वसा है या कार्बोहाइड्रेट या फिर प्रोटीन या स्टार्च. तुम अपने घर की रसोई में खुद रसायन की मदद से ऐसा जान सकते हो..

वसा पता करने के लिए कुछ भूरे चौकोर कागज लो..

अब जो खाने में तुम्हें पसंद है (जैसे कचौरी, हलवा,रोटी या समोसा) उसे कागज पर रगड़ो..अब इसे सूखने दो

अगर इसमें वसा है तो रोशनी इसके पार दिखेगी जहां रगड़ा गया वहां से कागज चमक उठेगा...

स्टार्च पता करने के लिए दवाई की दुकान से मिलने वाले टिंचर आयोडीन की दो बूंदें खाई जाने वाली चीज पर डालो अगर स्टार्च है तो बूंदें नीले-काले रंग में बदल जाऐंगी..

बोया पेड़ बबूल का

– शिखर चंद जैन

सोनू मुहावरे और लोकोक्तियाँ याद कर रही थी। गृहकार्य में उसे उनके अर्थ की व्याख्या और वाक्य प्रयोग के लिए भी कहा गया था। कुछ लोकोक्तियाँ और मुहावरे उसे अजीब लग रहे थे।

उसने कहा– ''माँ! ये मुहावरे इतने अजीब क्यों हैं? भला कोई बबूल का पेड़ बोएगा तो आम की आशा करेगा ही क्यों? कोई ऊँट के मुँह में भी क्या जीरा देता है? और यह तो सभी जानते हैं कि जैसे को तैसा और जैसी करनी वैसी भरनी या कर भला तो हो भला।''

माँ अपने काम में व्यस्त थीं इसलिए उन्होंने कुछ नहीं कहा।

अगले दिन सुबह सोनू जल्दी ही उठ गई। माँ, पिताजी, चाचा, उसका भाई दीपू सभी नहा चुके थे। उसने भी फटाफट स्नान कर लिया।

दरअसल आज वे सब रणथंभौर अभ्यारण्य में घूमने और पिकनिक मनाने जा रहे थे। इस अभ्यारण्य में तरह–तरह के पशु–पक्षी, शेर, चीता, तेंदुआ और बाघ जैसे जंगली जानवर स्वच्छंद विचरण करते थे। हरे भरे वातावरण में पशु–पक्षियों को साक्षात देखने का आनंद ही कुछ और था। सभी उत्साहित थे।

सब गाड़ी में सवार होकर वन विहार का आनंद ले रहे थे। ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी और गुनगुनाती धूप भी थी। सब जगह–जगह पक्षियों के कलरव, कुलांचे भरते हिरणों के झुंड देखते हुए आगे बढ़ रहे थे।

तभी माँ ने सुझाव दिया कि एक स्थान पर रुक कर भोजन कर लेते हैं। सबको भूख लग चुकी थी। सबने तुरंत हाँ कर दी। ड्राईवर ने एक सुरक्षित स्थान देखकर गाड़ी किनारे कर ली। सभी वहाँ विश्राम करने लगे।

तभी सोनू ने पास की एक झाड़ी में नीले रंग का एक अनूठा पक्षी देखा। वह तेजी से उधर लपकी ताकि उसकी फोटो ले सके। पक्षी उसकी आहट से आगे की ओर उड़ गया। सोनू भी उसका पीछा करते हुए आगे निकल गई। तभी कम से कम ४० से ५० कौवों का एक झुंड न जाने कहाँ से आ गया। उन्होंने सोनू पर हमला कर दिया और चोंच से प्रहार करने लगे। सोनू दर्द से बिलबिला कर आगे की ओर भागी।

कौवों से तो किसी तरह पीछा छूट गया। लेकिन एक नई मुसीबत उसके पीछे पड़ गई। ८–१० गायों का एक समूह उसकी ओर दौड़ता हुआ आ गया।

सोनू घबरा कर गिर गई। गायों के खुर और सींगों से उसे खूब चोंटें आईं। उसकी जींस घुटनों के पास से फट गई थी और खून रिसने लगा था।

सोनू सहायता के लिए माँ–पिताजी को आवाज लगाना चाहती थी लेकिन उसके मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी। किसी प्रकार घिसट–घिसट कर वह आगे की ओर बढ़ने लगी। उसे दूर से गाड़ी दिखाई देने लगी थी। तभी काले मुँह के बंदरों का एक झुंड वहाँ आ गया। एक बंदर ने उसकी चोटी पकड़ कर खींच ली और दूसरे ने गाल पर कसकर चांटा मारा

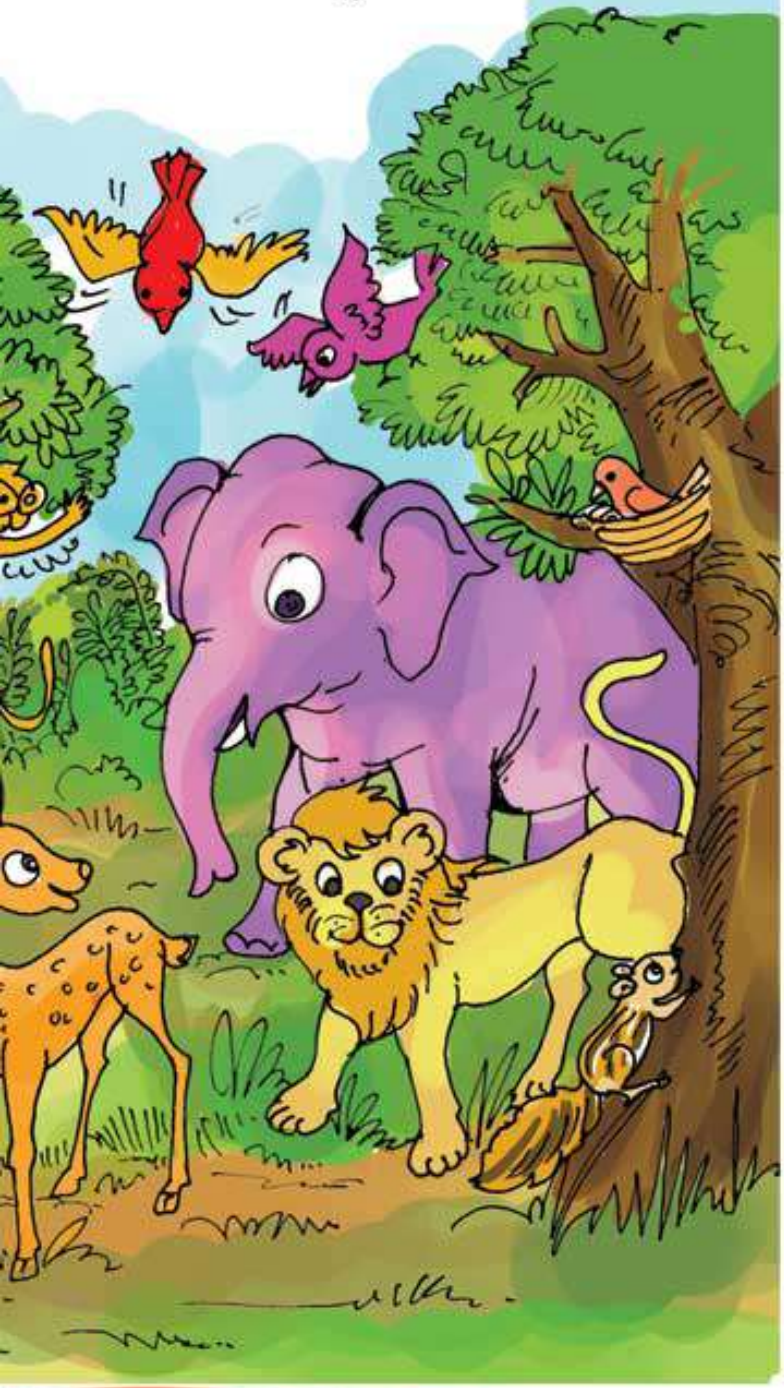

और उसके हाथ से मोबाईल छीन लिया।

सोनू समझ गई कि आज वह शायद ही इन जंगली पशु–पक्षियों से बच पाए। तभी उसे गौरैया का एक झुंड चीं–चीं करता हुआ दिखा। उसने देखा वहीं माँ और पिताजी थे।

सोनू जोर–जोर से चीखने लगी– ''माँ बचाओ! पिताजी बचाओ!''

उसने माँ की आवाज सुनी। माँ कह रही थीं– ''सोनू उठो। क्या हुआ तुम्हें? जागो, सुबह हो गई।''

सोनू भरी सर्दी में पसीने से तरबतर हो चुकी थी। दो चार पल बाद उसे समझ में आया कि उसने जो कुछ देखा वह एक डरावना सपना था।

माँ ने उसे पुचकारते हुए पानी पिलाया। वह कुछ संयत हुई तो पूछा– ''क्या बात हुई बेटा? कैसा डरावना सपना देख लिया?''

सोनू ने माँ को पूरी बात बताई। माँ ने हँसते हुए कहा– ''अब तुम्हें कल वाले मुहावरे और लोकोक्तियों का अर्थ समझ में आ गया होगा। बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय? तुम हमारे घर के बाहर आने वाली गायों को अक्सर डंडे से मार कर भगा देती हो, बंदर और कौवों पर पत्थर फेंकती रहती हो तो भला वे तुम्हें कैसे प्यार कर सकते हैं? जैसी करनी वैसी भरनी यानी जैसे को तैसा।''

सोनू ने निराश होकर कहा– ''लेकिन माँ! मैं गौरैया के लिए तो छत पर पानी भरकर रखती हूँ ना।''

माँ बोलीं– ''कर भला तो हो भला! तभी तो गौरैया ने शोर मचाकर हमारी ओर तुम्हारा ध्यान दिलाया था ना। और फिर जो दयालुता का काम तुम करती हो वह बहुत मामूली है। यानी ऊँट के मुँह में जीरा।''

सोनू ने माँ से क्षमा माँगते हुए वचन दिया कि अब वह किसी पशु–पक्षी को कभी नहीं सताएगी।

– हावड़ा (पश्चिम बंगाल)

लघुकथा

सम्मान

– गोविन्द भारद्वाज

''पिताजी! आप मेरी शाला मत आया करो।'' ''क्यों बेटा! कोई काम पड़ेगा तो आना ही पड़ेगा।'' ''वह इसलिए कि आप मजदूर हैं..।'' ''बेटा! क्या मजदूर इंसान नहीं होता?'' ''समझो न पिताजी.... मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है।'' ''ठीक है बेटा...। उसी समय शाला के प्राचार्य की कार आकर रुकी।

''अरे प्राचार्य जी आप! मुझे बुला लिया होता, मैं आ जाता।'' ''अरे भाई! कलाकार को बुलाया नहीं जाता बल्कि उस तक आया जाता है... कल विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक हुई थी। आपको अध्यक्ष महोदय ने शाला के वार्षिकोत्सव में सम्मानित करने का निर्णय लिया है। बस मैं उसका आमंत्रण देने आया हूँ।''

''अरे! एक मामूली से मजदूर का सम्मान।'' किसने कहा तुम एक मामूली मजदूर हो। तुम तो एक महान मूर्तिकार हो... कलाकार हो... सरस्वती माँ की कितनी सुंदर मूर्ति बनाई है तुमने वाह! ऐसा लगता है जैसे वह अभी कुछ बोलने वाली हैं।''

अपनी प्रशंसा सुनकर उसने बेटे की ओर देखा।

बेटे की आँखों से आँसू टपक रहे थे। उसके एक–एक आँसू मानों कह रहे हों... पिताजी क्षमा कर दो.. मैं आपको पहचान नहीं सका।

आप अवश्य आना मेरे विद्यालय में.. आपका तो बहुत सम्मान है।

– अजमेर (राजस्थान)

कविता

वर्षा

– उदय मेघवाल 'उदय'
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

रिमझिम रिमझिम वर्षा आए।
गिरती बूँदें मन को भाए।
गर्मी से व्याकुल पृथ्वी को,
वर्षा ही राहत दिलवाए।
चम–चम चम–चम चपला चमके,
उमड़–घुमड़ कर बादल गरजे।
जीव–जन्तु सब नाचे गाएँ,
पेड़ों के तन–मन हैं हरषे।

निकले छाते अरु बरसाती।
जब जब भी यह पावस आती।
बच्चों का यह मन बहलाए,
हर घर में खुशहाली लाती।
सूखी धरती को सरसाए।
वर्षा अमृत जल बरसाए।
बहा–बहा नदियों का कूड़ा,
जल स्रोतों को स्वच्छ बनाए।

कहां हूं?

चित्रकथा-

धाड़..
अरे ये तो बेहोश हो गया है, कोई पानी मारो...
मेरे पास है पानी..
उठो भई..
उंह..आं... मैं कहां हूं?
ये जानने के लिए ये किताब लीजिए साब इसमें इस शहर का पूरा नक्शा और जानकारी है, कीमत सिर्फ पांच रुपया...

थकना नहीं है

– रजनीकांत शुक्ल

राजस्थान का चित्तौड़गढ़ शूरवीरों का शहर कहा जाता है। कभी यह मेवाड़ की राजधानी थी। इस बलिदानी धरती का कण-कण हमारे मन में देशप्रेम की लहर पैदा करता है।

राजस्थान की एक नदी गंभीर मध्यप्रदेश के जावरा की पहाड़ियों से निकलकर निम्बाहेड़ा में प्रवेश करती है। यहीं पर इस नदी में १९५६ में बाँध का निर्माण किया गया है जिससे चित्तौड़गढ़ जिले को सिंचाई की सुविधा मिलती।

इसी चित्तौड़गढ़ जिले की तहसील निम्बाहेड़ा के एक गाँव केली में रहने वाले प्रह्लाद उपाध्याय का बेटा था बालकृष्ण उपाध्याय।

जब यह घटना घटी थी उस समय बालकृष्ण की आयु १६ वर्ष की थी। वर्ष २००१ के जुलाई महीने की वह छब्बीस तारीख थी। जब केली गाँव के ही नूर मोहम्मद की पत्नी और उनकी बेटी तथा उनके पड़ोस में रहने वाले मोहम्मद सेलम की दो बेटियों ने मिलकर गंभीर नदी में नहाने की योजना बनाई।

वे लोग नदी के किनारे नहाने के लिए गए। संयोग से उस दिन कई और लोग भी नदी के किनारे पर थे। उनमें बालकृष्ण उपाध्याय भी अपने मित्रों के साथ वहाँ पर आया हुआ था।

वे सारी महिलाएँ एक साथ नहाने के लिए नदी में उतरीं थीं। नहाते समय उनमें से एक लड़की का पैर नदी में फिसल गया। वह पानी की गहराई की ओर जाने लगी तो दूसरी लड़की ने आगे बढ़कर उसे पकड़कर बचाना चाहा। किन्तु बचाने के बजाए वह स्वयं लड़खड़ा गई और उसी के साथ-साथ वह भी नदी के पानी में बहकर चल दी।

जैसे ही वे दोनों एक-एक कर नदी के बहाव में बहती हुईं जाने लगीं तो उनके साथ आई वे दोनों महिलाएँ घबरा गईं। घबराहट में वे भी बिना कुछ सोचे-विचारे उन्हें बचाने के लिए पानी में आगे बढ़ गईं। परिणाम यह हुआ कि वे दोनों स्वयं भी नदी में डूबने लगीं। यह सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि कोई कुछ समझ नहीं पाया। वहीं पर उपस्थित एक सब्जी वाले की दृष्टि उन पर पड़ गई। वह जोर से सहायता के लिए चिल्लाने लगा। उसकी चीख चिल्लाहट से लोगों का ध्यान उनकी ओर गया।

जब यह आवाज बालकृष्ण के कान में पड़ी तो उससे रहा नहीं गया। उसे तैरना आता था। बिना कोई समय गँवाए वह दौड़ता हुआ गया और उन डूबते लोगों को बचाने के लिए नदी के पानी में कूद पड़ा।

जब तैरता हुआ वह उन लोगों की ओर गया तो ऐसे में उसका पैर पानी के अंदर किसी से टकरा गया। उसे लगा कि यह उनमें से ही किसी एक के शरीर का भाग है। उसने तुरन्त पानी के अन्दर गोता लगाया और जानने का प्रयत्न किया कि वह कौन है। वे नूर मोहम्मद की पत्नी थीं।

बालकृष्ण ने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें लेकर

किनारे की ओर ले जाने का प्रयत्न करने लगा। किन्तु शरीर भारी था इसलिए ले जाने में बालकृष्ण को परेशानी हो रही थी। किन्तु साहस न छोड़ते हुए वह लगातार अपने प्रयास में लगा रहा।

उन्हें किनारे सुरक्षित पहुँचाकर वह दूसरे लोगों को बचाने के लिए फिर से नदी में कूद गया। अब तक उसके मित्र भी उसकी सहायता के लिए आगे आ गए थे। पानी में कूदकर बहाव के साथ तैरते हुए उन्होंने दो लड़कियों को एक-एक करके पानी से बाहर निकाल लिया। उन दोनों को भी किनारे तक सुरक्षित पहुँचाकर उसकी हिम्मत बढ़ चुकी थी। बाकी बची एक लड़की अभी भी नदी के अन्दर थी जिसे बचाने के लिए एक बार फिर बालकृष्ण पानी में कूद गया।

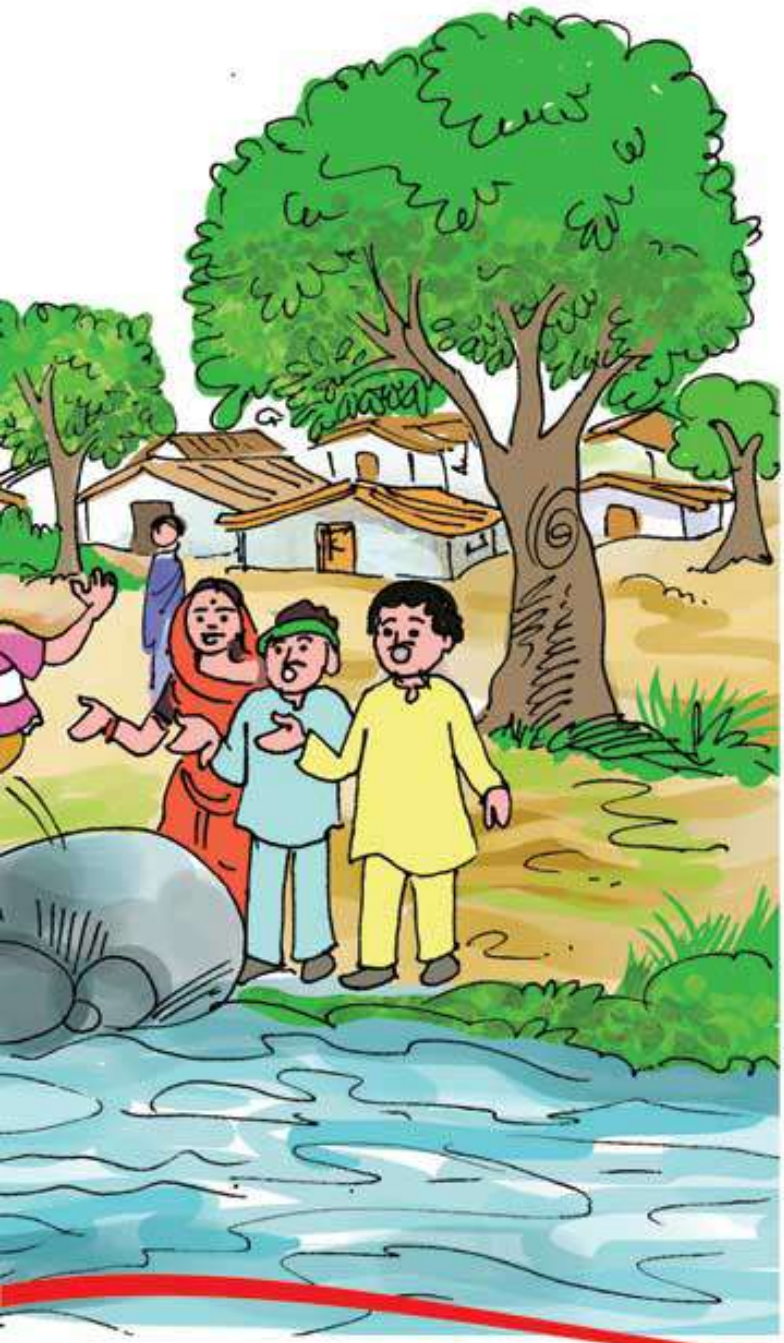

उत्साह से भरा हुआ वह शीघ्र ही तैरता हुआ उस लड़की के पास तक जा पहुँचा। अब तक उसके कई गोते लग गए थे। नदी का पानी उसे बहाए लिए जा रहा था। बालकृष्ण कई चक्कर लगाने के कारण काफी थक चुका था। लेकिन फिर भी वह साहस के साथ लगा हुआ था।

बालकृष्ण ने निकट जाकर उसको आगे बढ़ने से रोक दिया और फिर उस लड़की को पकड़ लिया। बड़े प्रयत्नों और मेहनत के बाद बालकृष्ण उसे भी किनारे तक अंतत: ले ही आया। इतना करके उसके चेहरे पर संतोष की रेखाएँ स्पष्ट चमक रहीं थीं।

डूबने वालों को सुरक्षित नदी से बाहर निकला देखकर सभी लोग प्रसन्न थे। किन्तु पानी में डूबने के समय उनके पेट में चले जाने वाले पानी के कारण वे अचेत थे। लोगों ने प्रयास किए और उनकी चेतना लौट आई।

बालकृष्ण ने अपने साहस और धैर्य से उन डूबते लोगों की जान बचाकर अपनी हिम्मत का परिचय दिया था। उसकी बहादुरी की सभी ने प्रशंसा की। उसके इस साहसिक कार्य के लिए बालकृष्ण का नाम लोगों द्वारा वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया।

भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली द्वारा बालकृष्ण को वर्ष २००२ के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। २००३ के गणतंत्र दिवस के अवसर पर उसे परिषद के द्वारा नई दिल्ली बुलाया गया और देश के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने राजस्थान के बालकृष्ण उपाध्याय को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

नन्हें मित्रो!

मिलती हमें चुनौती जब, तब ही पता लग पाती,
संकट में ही छिपी शक्तियाँ निकलकर बाहर आतीं।

– नई दिल्ली

जान न पहचान, मैं तेरा मेहमान

– डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधुरी

जंगल दिवस के अवसर पर 'हरियाली' जंगल में मेला लगा हुआ था। खूब भीड़–भाड़। चारों ओर दुकानें। तरह–तरह के पकवान बिक रहे थे। हाथी, भालू, गेंडा, शेर, मोर, बत्तख और तोते आदि पशु–पक्षी अपने बच्चों को साथ लेकर मेला घूमने आये हैं।

भुल्लर भालू और उसका मित्र खगडा गैंडा भी मेले में पहुँचे हैं। गैंडे ने कहा– ''मेरी जेब में पचास है। तेरे पास कितने होंगे? आज दोनों मिलकर जम कर गोलगप्पे और चाट खायेंगे।''

''और गुलाबजामुन? रस–मलाई?'' भुल्लर को मिठाई अधिक पसन्द है।

''ऊँ... ऊँ...!'' तभी उनकी दृष्टि पड़ी एक नन्हें बंदर पर जो अपनी आँखें मल–मलकर रो रहा था।

''तुम्हें क्या हो गया, भाई?'' भुल्लर ने बड़े स्नेह से पूछा।

किन्तु उधर तो केवल बाँसुरी बजती रही– ''ऊँ... ऊँ...! पें... एँ..!''

अब खगहे ने मुँह में चीनी घोल कर पूछा– ''बोलो भैया, क्या बात है? तुम्हारे माँ–पिताजी कहाँ हैं? मेले में खो गए हो क्या?''

यह सुनते ही रागिनी फुल वॉल्यूम में बजने लगी, ''माँ... आ... आ..!''

भुल्लर की आँखें नम हो गयीं, ''अवश्य खो गया होगा बेचारा। चल, इसे इसके माँ–पिताजी के पास पहुँचा देते हैं।''

दोनों मित्र दो तरफ से उस बंदर के बच्चे को पकड़कर एक ओर चलते बने। किन्तु थोड़ी दूर जाते ही फिर से वही शहनाई... ''ऊँ... ऊँ...! पें... एँ..!''

दोनों ने देखा वो बच्चा एक केले वाले के ठेले के सामने खड़ा है। एक कदम भी आगे बढ़ने को तैयार नहीं! उसकी नजरे तीर की तरह केलों पर बिंध गई हैं।

गहरी साँस छोड़ते हुए खरहे ने कहा– ''का गुरु! अब बच्चे को खिलाना तो हमारा धर्म बनता है।''

मन की व्यथा मन में रखते हुए उसने आधे दर्जन केले ले लिए। जेब कुछ ढीला हो गया। और देखते ही देखते वे केले उस नन्हें बंदर के पेट में समा गए।

दोनों मित्र केवल नन्हें का मुँह ताकते रहे। हाय! अभी तक हमने मुँह नहीं झुठलाया और यह उस्ताद हमारी जेब से रुपये उड़ा ले गया! खगहे ने उसे दुलारते हुए पूछा– ''तेरा नाम क्या है?''

''ब–न्–दर....।'' करुण स्वर में उत्तर।

''सो तो तुम हो ही। पर तेरा नाम क्या है?'' खगहा को लगा– हमने तो बड़ी मुसीबत गले लगा ली।

आगे एक हिप्पो चाट गोल–गप्पे का ठेला लेकर खड़ा था। अपने हाथ के चिमटे को तवे पर मार–मार कर वह बीच–बीच में आवाज कर सबका ध्यान आकृष्ट कर रहा था– टन्.... टन्...।

पल भर के लिए दोनों मित्र ठेले के सामने ठहरे क्या होंगे कि हिप्पो ने तपाक से एक दौना आगे बढ़ा दिया। भुल्लर या खगहा कुछ कह सके इसके पहले ही नन्हें ने लपककर दौना अपने हाथ में ले लिया। वे रोकते इसके पहले ही गोल–गप्पे आया राम और गया राम होते गए। हिप्पो गोल–गप्पे आगे बढ़ाता और नन्हा उसे चट करता जाता।

छः गोल–गप्पे समाप्त होते ही हिप्पो ने उससे पूछा– ''का हो भैया! टमाटर चाट बना दूँ? खट्टा की तीखा? चटनी डालूँ कि मीठा?''

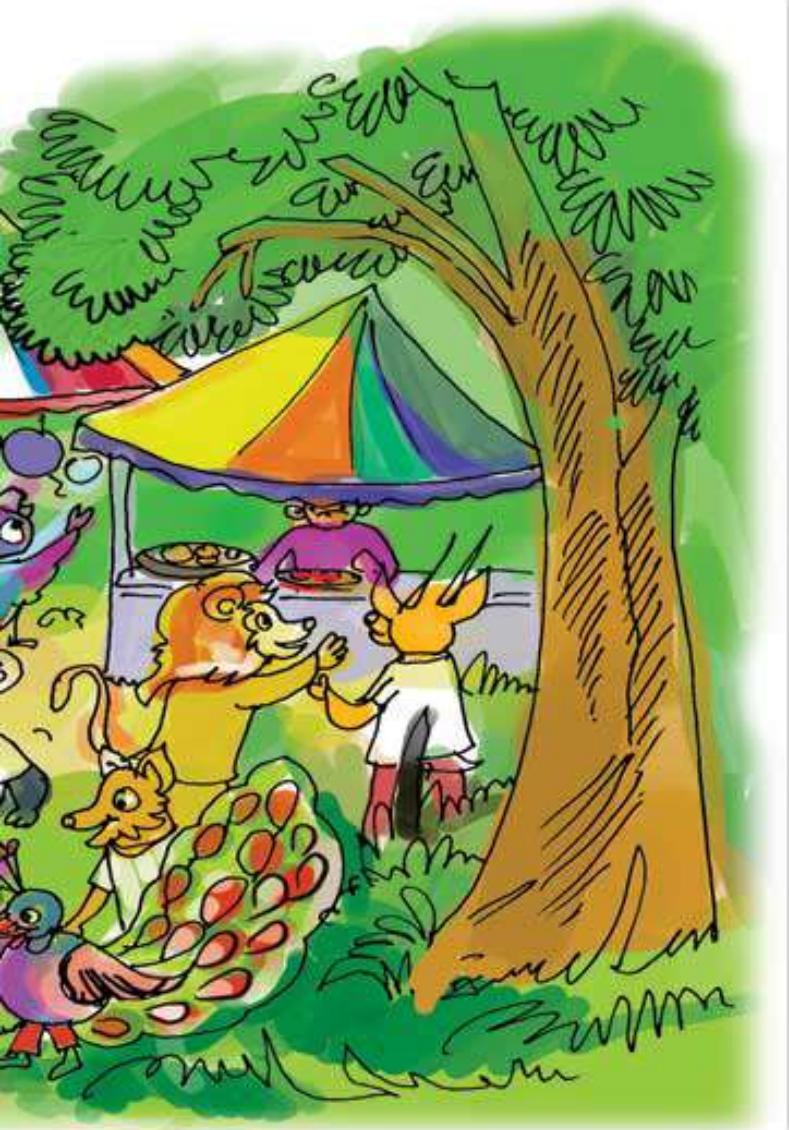

नन्हें ने केवल सर हिलाया। इसका अर्थ तो वही जाने। किन्तु देखते–देखते ही चाट भी गायब हो गई। बंदर के बच्चे ने अपना मुँह पोंछते हुए मुस्कराकर कहा– ''तुम दोनों कितने अच्छे हो, भैया!''

''हमें तेरे सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं है।'' मन ही मन झुँझलाते हुए भुल्लर ने चाट का दाम चूकता किया। फिर धीरे से खगहे से पूछा– ''क्यों मित्र! हम खाये नहीं केवल देखते रह गए और उसी में हमारे रुपये हो गये छू मंतर?''

''अब दोनों का मिलाकर कितना बचा होगा?'' गेंडे ने अपनी सींग ऊपर उठाकर फुस–फुसाकर पूछा।

''जस्ट हाफ! दोनों का मिलाकर अब पचास भी न होगा।'' भुल्लर उदास।

अब खगहे ने झल्लाकर नन्हें से पूछा– ''अरे तेरे माँ–पिताजी हैं कहाँ? यह तो अच्छी मुसीबत गले पड़ी है मान न मान, मैं तेरा मेहमान। भला करने चला, तो फंदा पड़े गला।''

नन्हें ने शरारत भरी नजरों से उसकी ओर देखते हुए फिर से शहनाई बजाने लगा, ''ऊँ... ऊँ...! पें... एँ..!''

तभी सामने से हाथ में लाठी लिए एक मेला–पुलिस चिम्पांजी दिखाई पड़ गया। चिम्पांजी ने रोबदार आवाज में पूछा– ''अरे! तुम दोनों इतने बड़े हो गए हो और उस बच्चे को रुला रहे हो? बात क्या है?''

दोनों घबरा गए। वे कुछ उत्तर देते इसके पहले ही अपने हाथ से एक ओर संकेत करते हुए नन्हें ने नारा बुलन्द किया, ''वो आ–इ–स्–क्री–म!''

मानो वह आइसक्रीम को बुला रहा है कि आओ मेरे पास, मेरे प्यारे!

चिम्पांजी ने मुस्कराकर कहा, ''अरे बच्चे को मेला घुमाने लाए हो तो दिला दो एक आइसक्रीम। हाः हाः!'' आगे बढ़ते हुए पीछे मुड़कर दरोगा वाले रोब में

कहता गया, ''देख क्या रहे हो? जाओ आइसक्रीम खिलाकर इसे घर पहुँचा दो।''

अब भुल्लर को रोनी सूरत बनाकर कहना पड़ा– ''वही तो ज्ञात नहीं है, साहब!''

''क्या फालतू बक रहा है? घर का पता ज्ञात नहीं तो क्या बच्चे का अपहरण किया है?''

मामला बिगड़ते देख खगहा मित्र का हाथ पकड़कर आगे निकल आया। पीछे से पुलिस महोदय ने धमकी की, ''अरे! बच्चे को छोड़कर कहाँ जा रहा है? कहीं खो गया तो?''

बस, क्या था? वह नन्हा बंदर तुरन्त जाकर खड़ा हो गया आइसक्रीम वाले के पास। तुरन्त आर्डर भी दे दिया, ''एक केसर पिस्ता।''

फिर? दोनों मित्रों के चेहरों पर एवं जेब में छाया हुआ था घनघोर सन्नाटा। चिम्पाजी दूर चला गया था। सो निर्भय होकर भुल्लर ने दाँत पीसकर उससे पूछा, ''तेरे माँ–बाप हैं भी कि तू अनाथ हैं? कुछ बताता क्यों नहीं?''

''माँ–बाप हैं– एँ!'' नया राग अलापते हुए उसने अँगुली उठाई। दूसरी तरफ दो बंदर खिलौने लेकर बैठे थे।

इनको देखते ही पिताजी बंदर ने पूछा, ''अरे भाई! यह शैतान तुम्हें कहाँ मिल गया? तब से माथा खाए जा रहा था कि हमें आइसक्रीम दिला दो, चाट खिला दो। अब तुम्हीं बताओ दुकान छोड़कर मैं कैसे जाता?''

उसकी माँ ने भी डाँटते हुए कहा, ''यह तो एकदम खानदानी बंदर है। तुम लोगों को भी अवश्य सताया होगा।''

खेल खतम पैसा हजम।

वे दोनों अपना सा मुँह बनाकर लौट चले।

हाँ, नन्हें ने हाथ हिलाते हुए कहा, ''धन्यवाद भैया! तुम दोनों बड़े भले हो।''

– जयपुर (राजस्थान)

आपकी पाती

देवपुत्र का मार्च २०२२ का अंक स्वयं में अप्रतिम है। स्वतंत्रता के ७५वें वर्ष में ७५ रचनाकारों के ७५ राष्ट्रीय बाल गीतों के श्रमसाध्य चयन, संकलन और चित्ताकर्षक साज–सज्जा के साथ प्रकाशन को एक बड़ी सारस्वत उपलब्धि की संज्ञा से विभूषित किया जा सकता है। इस संदर्भ में संपादक मंडल की भूमि जैसी वह भूमिका भूरि–भूरि प्रशंस्य व नमस्य है, जिसका सहज बोध होता है।

यह प्रस्तुति किसी विशेषांक से कमतर नहीं है। बच्चे अपने परिवार, समाज और देश के भविष्य हैं। भौतिकता के इस युग में उनमें राष्ट्रीयता के भाव जाग्रत करना बहुत ही बड़ी विशेषता है। इसी प्रकार के संग्रहणीय अंक प्रतीक्षित हैं।

मुखपृष्ठ पर सिंहवाहिनी भारतमाता के इंद्रधनुषी चित्र के साथ पं. सोहनलाल द्विवेदी का गीत विशेष प्रासंगिक हैं। 'वीणा वादिनी वर दें' पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला तथा मातृवन्दना डॉ. रवीन्द्र शुक्ल पोर–पोर भाव–विभोर करते हैं। आकृष्ट करती उत्कृष्ट पत्रिका को सुदूर ग्रामीण अंचल में भी पहुँचाया जाना चाहिए, जिससे सुंदर भावी भारत से सरोकार का सपना साकार करने की प्रेरणाएँ नए पँख लगाएँ।

बाल साहित्य के पुरोधाओं की कालजयी चुनिंदा रचनाओं को एक ही अंक में अवसर प्रदान करना, देवपुत्र का यह अवदान चिरस्मरणीय रहेगा। आपके संपादकीय परिवार को बधाई सहित ढेर सारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

– राजा चौरसिया
उमरियापान (म. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

जंगल की सैर

– किसलय हर्ष

जलज का नए शहर और नए विद्यालय में धीरे–धीर मन लगने लगा था। शुरुआत में उसे पुराने शहर और मित्रों की बहुत याद आती थी।

उसके पिताजी सेरीकल्चर (रेशम कीट पालन) विभाग में बड़े पदाधिकारी थे और उनका स्थानांतरण चाईबासा शहर में हुआ था। इन्हें यहाँ आए हुए अभी दो महीने ही हुए थे। उन्होंने यहाँ जलज का नामांकन एक अच्छे विद्यालय में करवा दिया था।

जलज के पिताजी की ड्यूटी सामान्यत: चाईबासा के मुख्य कार्यालय में ही थी, किन्तु कभी–कभी वे क्षेत्र–निरीक्षण करने के लिए जंगल में स्थित आदिवासियों के गाँव भी जाया करते थे। सेरीकल्चर विभाग के अधिकतर कार्य जंगल के आदिवासी वाले क्षेत्रों में ही होते थे।

एक बार वे घर पर सभी को जंगल के बारे में बता रहे थे। उनकी बातें सुनकर जलज और उसकी माँ ने जंगल घूमने की इच्छा प्रकट की। तब आने वाले रविवार के दिन जंगल की सैर करने का कार्यक्रम बना।

रविवार के दिन जलज और माँ–पिताजी जीप पर बैठकर जंगल की सैर करने के लिए निकले। चाईबासा शहर से जंगल की दूरी पंद्रह से बीस किलोमीटर थी। पहाड़ी मार्ग से होते हुए वे जंगल की ओर बढ़े।

जंगल में प्रवेश करने पर सभी को बड़ा आनंद आया। सड़क के दोनों ओर हरे–भरे विशाल पेड़ों का साम्राज्य था। कुछ आगे बढ़ने पर एक पहाड़ी नदी थी, जिसके समीप आदिवासियों का एक छोटा सा गाँव था। पिताजी ने बताया कि यहाँ पर इसी तरह कुछ दूरी के अंतराल पर आदिवासियों के ऐसे ही बहुत से गाँव हैं।

वे गाँव के निकट गए। तब तक बहुत से आदिवासी वर्ग के लोग वहाँ पर एकत्र हो गए थे। पिताजी उन सभी को जानते थे। उनमें से एक सोमेश नाम के युवक ने उन्हें जलपान करवाया। इसके बाद वो इन्हें लेकर जंगल की तरफ और आगे बढ़ा।

आगे ग्रामीण रास्तों के दोनों ओर घनी झड़ियों का विशाल अम्बर था। सोमेश ने बताया कि यहाँ के लोगों की जीविका का मुख्य: स्रोत जंगल ही है, वे यहीं से कंद–मूल तथा शिकार वगैरह करके अपना भोजन एकत्र करते हैं। साथ ही उसने यह भी बताया कि पहाड़ी के नीचे के लोग पशुपालन एवं खेती–बाड़ी

करके भी अपनी जीविका चला लेते हैं।

पिताजी ने तब बताया कि यहाँ के लोग प्रकृति के उपासक होते हैं। ये लोग बड़े ही सीधे एवं सरल स्वभाव के होते हैं। ये लोग न कभी झूठ बोलते हैं और न ही छल–कपट किया करते हैं।

जलज ने भी बीच रास्ते में ध्यान दिया कि इनके घर और घर के आसपास काफी साफ–सफाई थी। इनके मिट्टी और लकड़ी के बने घर बहुत ही सुंदर थे।

माँ ने फिर सोमेश से पूछा कि– ''क्या यहाँ पर जंगली जीव–जंतु नहीं आते हैं?'' उसने तब बताया कि– ''जंगल में तो ये हमेशा ही रहते हैं और रात में कभी–कभी गाँव में भी आ जाते हैं, लेकिन हम उन्हें अपने तरीके से भगा दिया करते हैं।''

जंगल और यहाँ पर रहने वाले लोगों के बारे में जानकर सभी को बहुत अच्छा लग रहा था। वे धीरे–धीरे कुछ और आगे बढ़े। आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि जंगल का एक भाग वीरान सा था। वहाँ पर वृक्षों की संख्या नगण्य थी। उन्होंने इसका कारण सोमेश से पूछा।

सोमेश ने बताया कि– ''यहाँ के ही कुछ स्वार्थी तत्व के लोग धन के लालच में आकर कीमती लकड़ियों की तस्करी किया करते हैं।'' उसकी बात सुनकर सभी चिंता में पड़ गए। पिताजी ने तब कहा कि– ''अगर इसी तरह वृक्षों की अवैध कटाई होती रही तो जंगल के अस्तित्व पर ही संकट आ जाएगा।''

सोमेश ने तब बताया कि– ''गाँव के लोग अब ऐसे स्वार्थी तत्वों को चिह्नित कर उस पर कार्यवाही कर रहे हैं और उन्हें दण्ड भी दे रहे हैं।''

माँ ने फिर कहा कि– ''जितने वृक्ष काटे जा रहे हैं या काटे गए हैं, यदि उसके स्थान पर दोगुने–तीन गुने पौधे लगा दिए जाए तो जंगल के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न नहीं होगा।'' सभी को उनकी बातें अच्छी लगी। सभी ने उनका समर्थन किया और कहा कि लोगों को ऐसा ही करना चाहिए।

अब तक जलज ने बहुत सारी तस्वीरें भी जंगल की अपने मोबाईल से खींच ली थी। वह जंगल की सैर कर अत्यन्त प्रसन्न था। यहाँ पर आकर उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह किसी नई दुनिया में आ गया हो।

इसके बाद वह माँ–पिताजी के साथ घर की ओर लौट पड़ा। उसने कुछ सुंदर तस्वीरें अपने सोशल नेटवर्किंग साइट पर डाल दी थी और मित्रों के रोचक कमेंट्स भी उसे मिल रहे थे। आज वह अत्यंत प्रसन्न भी था क्योंकि पहली बार उसने प्रकृति का जीवंत स्वरूप देखा था।

– मल्हारा (झारखण्ड)

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बाल साहित्य सर्जक डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल के स्वस्तिक प्रकाशन आत्माराम बिल्डिंग १३७६ कश्मीरीगेट दिल्ली-११०००६ द्वारा प्रकाशित दो महत्वपूर्ण एकांकी संकलन।

विटामीनों से मुलाकात
मूल्य ३५०/-

विज्ञान संबंधी पन्द्रह बाल एकांकी जिन्हें आप अपने विद्यालयीन रंगमंच पर भी सरलता से खेल सकते हैं। जिनमें विज्ञान सम्बन्धित तथ्यों को अत्यन्त रोचक व सरल बनाकर सुगम बना दिया गया है।

फूलों की भूल
मूल्य-३५०/-

नाटक व एकांकी में छुपी शिक्षाएँ बच्चों के मन में बहुत सरलता और स्थायी प्रभाव के साथ अंकित होती है। ऐसे ही १५ शिक्षाप्रद बाल एकांकी जो आपको शिक्षा भी इतनी सरलता से देते हैं कि वे मन में स्थायी रूप से बस जाएँ और सीखना बोझिल भी न बने।

जादुई बगीचा
मूल्य २००/-

उषा सोमानी बालसाहित्य की सुस्थापित रचनाकार हैं प्रस्तुत पुस्तक में आपके लिए वे लाई हैं शिक्षा, प्रेरणा व मनोरंजन देती २३ रोचक बाल कहानियाँ।

प्रकाशक- साहित्यगार धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

पवनकुमार वर्मा की श्रेष्ठ बाल कहानियाँ
मूल्य ५००/-

विख्यात बाल कहानीकार पवनकुमार वर्मा द्वारा रचित ४० बहुचर्चित, रोचक बाल कहानियाँ जो चुनी है लेखक ने आपके लिए।

प्रकाशक-निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,
३७, शिवराम कृपा विष्णु कॉलोनी, शाहगंज, आगरा (उत्तर प्रदेश)

आज के समय की १०१ बाल कविताएँ
मूल्य २२०/-

सूर्यकुमार पाण्डेय बाल साहित्य जगत के मूर्द्धन्य रचनाकारों में अग्रगण्य है। बाल कविता में नवाचार, नए प्रयोग, बिम्ब, कल्पना व यथार्थ का संतुलित सामंजस्य आपके लेखन की विशेषता है।

प्रकाशक-उ. प्र. भाषा संस्थान लखनऊ, ७२१-७२२ इंदिरा भवन लखनऊ (उ. प्र.)

गाँव की पूजा
मूल्य ५०/-

राजा चौरसिया गाँव की माटी की सौंधी महक लिए सरस, मुहावरों व लोकोक्तियों से समृद्ध कहानी लेखन के वरिष्ठतम रचनाकार है। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी २२ बाल कहानियाँ पठनीय हैं।

जोन-१ भोपाल, प्रकाशक-स्नेह प्रकाशन भोपाल २६-बी , देशबंधु भवन प्रेस कॉम्प्लेक्स एम.पी.नगर

छोटी कहानी

पक्षियों की व्यथा

– विनीता सिंह चौहान

एक छोटे से गाँव में मेरा घर, सामने शहर की ओर जाती हुई सड़क.. दूसरी ओर विशाल बरगद व आम के वृक्ष....।

समय बीतता गया शहरीकरण के चलते सड़क को हाईवे में परिवर्तित करने के प्रस्ताव पारित हुए, फिर बड़े–बड़े रोलर व जेसीबी ने मेरे घर के आँगन व कुछ भाग को ध्वस्त कर दिया, साथ ही ध्वस्त हो गई बचपन की स्मृतियाँ.... जैसे धमाचौकड़ी मचाना, पापड़–बड़ी का सूखना और पिताजी का समाचार–पत्र पढ़ना। जब विशाल बरगद व आम के पेड़ों को मिट्टी में मिला दिया गया, वह दिन मेरे मन–मस्तिष्क में आज भी जीवित है। कटे हुए विशाल तनों से रिसता पानी... मानो अश्रुधारा के रूप में बह रहा था, इधर–उधर पड़ी चोटिल शाखाएँ मानो कराह रही थीं। शाम को जब पक्षियों के झुंड आने शुरु हुए तो बहुत दर्दनाक दृश्य था। मानों आज यहाँ कोई भूकंप आया था, जिसमें पक्षियों के घोंसले उजड़ गए थे। सुबह जिन चूजों को पेड़ों की छत्र–छाया में छोड़कर चिड़ा–चिड़ी दाना लेने गए थे उनको मृत अवस्था में देखकर पक्षी बिलख रहे थे, अजन्में बच्चे, घोंसलों व अंडों सहित समूल नष्ट हो गए थे। वातावरण में दु:ख भरा कोलाहल गूँज रहा था।

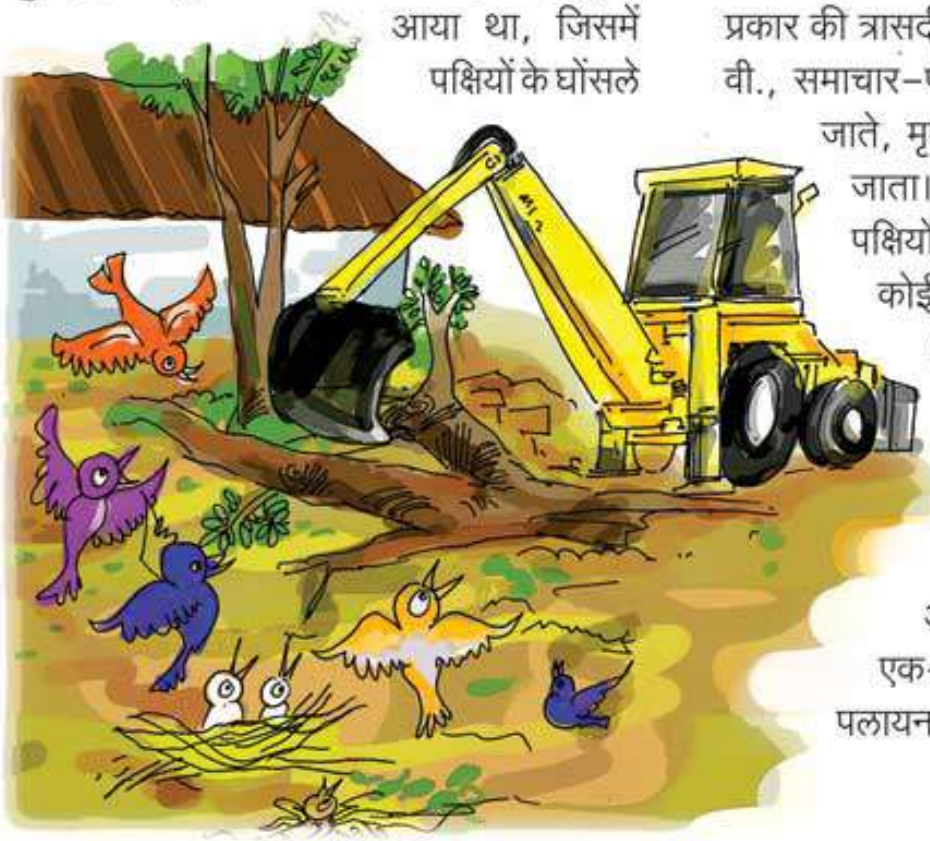

बहती ठंडी हवा, विशाल आसमान, गोधुली बेला का सौंदर्य सब मौन थे, बस पक्षियों की चीखें गूँज रही थीं। आसमान से जाते अन्य पक्षियों के झुंड भी नीचे आकर अपने साथियों को ढाढस बंधा रहे थे। फिर अँधेरी रात घिर गई, पक्षियों के विशाल समुदाय ने बिजली के तारों व पेड़ के ठूँठों पर रात बिताई। सुबह तक कुछ और पक्षियों की भी मृत्यु हो गई थी। बचे हुए भूखे–प्यासे, बिलखते पक्षियों ने उड़ानों को थाम कातर दृष्टि में दिन और रात बिता दिए।

इस हृदय विदारक भूकंप त्रासदी जैसी घटना को किसी भी मीडिया ने कवर नहीं किया। वरना इस प्रकार की त्रासदी यदि इंसानी क्षेत्रों में होती तो टी. वी., समाचार–पत्र, रेडियो आदि प्रसारण में जुट जाते, मृतक व घायलों को क्षतिपूर्ति दिया जाता। लेकिन जब यही घटना मूक वृक्षों व पक्षियों के साथ घटी तो... उनके साथ कोई नहीं था, बस था तो चोटिल वृक्ष और हताहत पक्षियों के आँखों में प्रश्न, कि क्या स्वार्थी इंसान हमें नए आश्रय व नुकसान की भरपाई दिला सकेंगे? जिनके कारण से आज हमारा यह परिणाम हुआ है और फिर अगली सुबह पक्षियों ने एक–दूसरे को सांत्वना दी और वहाँ से पलायन कर गए।

– इन्दौर (म. प्र.)

हड़ताल

– अनन्त आलोक

पशु–पक्षी तड़प–तड़पकर मर रहे थे। इंसानों को अजीब तरह की बीमारियाँ होने लगी थीं। सांस लेने में कठिनाई आ रही थी। पहले से बीमार व्यक्तियों की मृत्यु दर में भारी उछाल आ गया था। डॉक्टरों को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

बच्चे नौजवान युवा सब बराबर बीमार होने लगे थे। कार्बनडाईऑक्साइड का बढ़ता स्तर और ऑक्सीजन की कमी से लोग मरने लगे थे। बस इतनी बात डॉक्टर्स को समझ आ रही थी। सरकार ने विद्यालय, कॉलेज और अन्य सभी शिक्षा संस्थान, सरकारी कार्यालय भी बंद करने के आदेश दे दिए थे। लोगों से कहा गया कि अपनों के साथ रहें और एक–दूसरे का ध्यान रखें। सभी परेशान थे लेकिन परेशानी का कारण समझ से परे था।

गाँव के बच्चे पाठशाला में छुट्टी होने के कारण जंगल में लकड़ी लेने गए। उनकी दृष्टि पड़ी तो देखा कि कुछ पेड़–पौधे एक–दूसरे पर जैसे गिर पड़े हैं। उन्होंने इधर–उधर दृष्टि घुमाई तो इसी तरह के कुछ और भी पेड़ों के झुण्ड बने थे। बच्चों ने घर आकर यह बात अपने माँ–पिताजी से कही। उन्होंने साथ लगते जंगल में देखा। सच में पेड़ एक–दूसरे की ओर हल्के झुके हुए थे। कुछ लोगों ने अपने मोबाईल से विडियो बनाए और सोशल मीडिया पर शेयर कर दिए।

कुछ ही पलों में वीडियो वायरल हो गए। जिन्होंने यह वीडियो देखा उन्होंने भी जंगल में जाकर देखा तो वे भी हैरान थे। कुछ ही मिनटों में देश भर में इसी तरह के लाखों वीडियो सोशल मीडिया पर तो प्रसारित हो ही गए। समाचार टी. वी. चैनल पर भी आने लगे। कहीं पेड़ कम कहीं अधिक झुके हुए थे। उनके पास जाओ कोई हवा नहीं। कोई हरकत नहीं, आवाज नहीं, एकदम शांत। सुनसान, एक अजीब तरह की मरघटी शांति व्याप्त थी। सरकार हरकत में आई और वैज्ञानिकों का एक दल जाँच के लिए भेजा गया। वैज्ञानिकों को बच्चों की बात में दम लगा और वे इसी दिशा में आगे बड़े। अलग–अलग स्थानों से पेड़–पौधों के नमूने एकत्र किए गए। उन्हें परीक्षण के लिए प्रयोगशाला में जाकर जांचा परखा गया। जब तक रिपोर्ट आई तब तक सरकार की सभी प्रयत्नों के बाद भी हजारों की संख्या में लोग काल के मुँह में समा गए थे। मरने वालों में अधिकतर बूढ़े, बीमार और बच्चे थे। चारों ओर हाहाकार मची हुई थी। रिपोर्ट से ज्ञात हुआ कि पेड़–पौधों ने ऑक्सीजन बनाना बंद कर दिया है।

पेड़ों के पत्ते भी सूखने लगे थे। पीले पड़ चुके पत्ते झड़ रहे थे। अब यह ज्ञात कैसे हो कि वृक्षों ने काम करना क्यों बंद कर दिया है। अनुसंधान जारी था। लेकिन तब तक लोगों की जान कैसे बचाई जाए। लोग दम घुटने से मर रहे थे। लोगों की जान बचाने के लिए उन्हें वेंटीलेटर पर रखा जाने लगा था लेकिन रोगियों का प्रतिशत जिस प्रकार से बढ़ रहा था उस हिसाब से वेंटीलेटर बनाना भी संभव नहीं था।

बुजुर्ग लोग बता रहे थे कि ऐसा ही एक रोग कुछ दशक पहले भी आया था। जिसने न केवल हमारे देश को बल्कि पूरे विश्व को ही अपनी चपेट में ले लिया था। असंख्य लोग मारे गए थे। लोग अपने ही परिवार के सदस्य से डरने लगे थे। उन्हें छूने से, यहाँ तक कि उनके पास जाने से भी बीमार होने का खतरा था। इसलिए लोग मरीज से दूर रहते थे। उस रोग का नाम कोविड–१९ बताया गया था। अब फिर उसी तरह... लेकिन भिन्न प्रकार की इस आफत ने सबको दहशत में डाल दिया था।

वैज्ञानिक अनुसंधान करते हुए थक चुके थे।

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। अचानक उन्हीं बच्चों के मन में यह बात आई। पलक ने कहा– ''बिट्टू काका! पेड़–पौधे कहीं हड़ताल पर तो नहीं चले गए?''

''अरे हाँ! सही है ऐसा ही होगा। वरना भले–चंगे ये वृक्ष काम करना क्यों छोड़ते! यह बात पलक से बुलवाकर सामाजिक माध्यम (सोशल मीडिया) पर डाली गई तो कुछ ही पल में चहूँ ओर फैल गई। कुछ ही घंटों में उन वैज्ञानिकों तक भी यह बात पहुँच गई जो इस पर खोज कर रहे थे।

उन्हें कुछ और तो सूझ नहीं रहा था। वे तुरंत वृक्षों के पास गए और उनके अलग–अलग भागों से कुछ और नमूने लिए। उस पर खोज कर यह ज्ञात हो गया कि हाँ वे हड़ताल पर ही हैं। यह भी ज्ञात हो गया कि वृक्ष इसलिए हड़ताल पर हैं कि उन्हें काटा जा रहा है। उनकी संख्या बहुत कम रह गई हैं। उन्हें सताया जा रहा है। ये सारे काम मनुष्य कर रहा है। अत: उन्होंने मनुष्य को सबक सिखाने के उद्देश्य से हड़ताल की है।

हालाँकि इसमें उनके भी बहुत से पेड़ भोजन के बिना शहीद हो गए थे। क्योंकि जब पेड़–पौधे कार्बन डाई ऑक्साईड नहीं ले रहे हैं तो वे अपना भोजन नहीं बना रहे हैं। इसीलिए ऑक्सीजन नहीं छोड़ रहे हैं। अब समस्या यह खड़ी हुई कि यह संदेश उन तक कैसे पहुँचे कि हम आप सबको तंग नहीं करेंगे। सतायेंगे नहीं। काटेंगे भी नहीं जब तक कोई वृक्ष सूख नहीं जाएगा।

बड़े–बड़े माइक लगाकर हर तरह से यह बात वृक्षों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। किन्तु सफलता हाथ नहीं लगी।

अंतत: थक हारकर वैज्ञानिकों को संदेश और पलक का ध्यान आया। उन्होंने तुरन्त उनसे संपर्क साधा और इसका भी समाधान खोजने के लिए कहा।

दोनों बच्चों ने कहा हम सब बच्चे पेड़–पौधों के पास जाकर क्षमा माँगेंगे। देशभर के बच्चों को एक ही समय में इकत्र किया जाए और सबसे प्रार्थना करवाई जाए कि– ''हम लोगों के लिए कृपया हड़ताल छोड़ दीजिए। हम लोग मर जायेंगे। हम लोगों के माता–पिता, दादा–दादी जिसने भी जो भी गलतियाँ की हैं। उन सबको भूलकर हमारे लिए कृपया यह हड़ताल छोड़ दो।''

देशभर के बच्चों ने रोते हुए पेड़–पौधों से लिपटकर यह प्रार्थना की। क्षमा माँगी और उनके आगे हाथ जोड़े। बच्चों की इस अश्रुपूरित प्रार्थना का असर हुआ और कुछ ही क्षणों में पेड़–पौधे सीधे होने लगे। प्राणवायु (ऑक्सीजन) फिर से प्रवाहित होने लगी और लोगों की जिन्दगी भी सांस लेने लगी। बच्चे भी प्रसन्नता से झूम उठे और पेड़ों को पकड़कर चूमने लगे।

– ददाहू, सिरमौर (हि. प्र.)

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 001-25251588, 25253684
Email : suryainterview@gmail.com Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी–मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना सिटी कैंपस में छः माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) रहेगी। संघ के संस्कारों में पले–बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम युवकों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

Post	Experience	6 Months Initial Training +1 Year OJT	After Training CTC
CA	IPCC/MTER(2Yrs Experince)	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	5 - 6 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto5 years)	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	9 - 12 L Per Annum	- do -
Engineers, Resher& Experienced	B. Tech (IIT)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B. Tech (NIIT)	4.5 - 6 L Per Annum	- do -
	B. Tech (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	M. Tech (IIT)	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M. Tech (NIT)	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M. Tech (Other Institutes)	3.6 - 4 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT+IIM)	15 L+Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
Post Braduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. (Freshers/Experience) Ph.D.*	2 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	2.4 L Per Annum	- do -
	B.Sc., BCA, BBA, BA, B.Com (Persuing/Passed)	1.2 L Per Annum	- do -
	Diploma	1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLB	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	LLM	3 - 3.6 L Per Annum	- do -

– उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली छात्रों को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं।

* **Ph.D. candidates** भी आवेदन कर सकते हैं। **salary interview** के दौरान तय होगी।

* योग शिक्षक, प्राकृतिक चिकित्सक/उपचारक, **Karate Teacher, Music Teacher & Stenographer (Hindi + English)** भी आवेदन कर सकते हैं। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा।

*** Graduate Management Trainee (GMT)**

योग्यता–2022 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% तथा गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT/PCT के साथ–साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ 5,000/– प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ–साथ 11वीं में 8,000/–, 12वीं में 10,000/– Graduation Ist years में 12,000/– IInd year में 15,000/:, IIIrd year में 18,000/–, MBA/MCA Ist Year में 22,000/–, MBA/MCA IInd Year में 27,000/– Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 40,000/– और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन/मानधन इससे अधिक भी हो सकता है।

*** Assistant Staff Cadre (ASC)**

योग्यता – 2022 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% एवं गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT/PCT में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महिने की ट्रेनिंग के दौरान 3000/– प्रतिमाह Stipend मिलेगा तथा मुफ्त भोजन और रहने की व्यवस्था होगी। तीन वर्ष की OJT/PCT के दौरान Stipend - Ist year :8,000/– प्रतिमाह व आवास, IInd year: 10,000/ प्रतिमाह व आवास, IIIrd year : 12,000/– प्रतिमाह व आवास। After training 15000/– (CTC) प्रतिमाह वेतन रहेगा।

*** Under Graduate Management Trainee(UGMT)**

योग्यता–2020 में 12वीं कर चुके भैया आवेदन कर सकते हैं। 12वीं में न्यूनतम अंक 70% प्राप्त किए हों और जो ग्रेजुएशन कर रहे हैं। आयु : 19 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी। OJT/PCT के साथ–साथ Graduation के बाद MBA/PG in Mass Communication करने की सुविधा दी जायेगी। इस दौरान आवास तथा पढ़ाई के अलावा Gradation IInd year में 12,000/–, IIIrd year में 14,000/– तथा Post Graduation Ist Year में 17,000/– तथा IInd में 20,000/– प्रतिमाह Stipend मिलेगा। Post Graduation पूरा करने के बाद 30,000/– (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

आवेदन हिन्दी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत वॉयोडाटा के साथ–साथ यदि आपने NCC/NSS/OTC/ITC/शीत शिविर/PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। विद्या भारती/ वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय/ छात्रावास या संघ या परिषद् अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक वायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV/आवेदन भेजें/CV /आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 I Email : suryainterview@gmail.com

आवेदन विज्ञापन छपने के एक माह के भीतर करें

मनाया योग दिवस

– पूनम पाण्डे

अभी बीस दिन बाकी थे किन्तु सारा विद्यालय ही योग दिवस की तैयारियों में मगन था। पांचवी कक्षा का मनु एकदम शांत था वह कुछ नहीं कर रहा था। अध्यापिका ने उसके पास जाकर पूछा कि– ''मनु बेटा! आप कुछ नहीं कर रहे हो, क्या हुआ?''

''मैं तो नालायक हूँ दीदी! बिलकुल नालायक। आपको पता है?''

मनु ने सुबकते हुए उत्तर दिया। ''अरे! नहीं बेटा ऐसा नहीं है।'' दीदी की बात पूरी भी न हो पाई थी कि मनु ने कहा– ''जी! मैं हर काम गलत कर देता हूँ। आज ही माँ–पिताजी ने यह कहा क्योंकि मुझसे पानी पीते समय गिलास गिर गया और मेरा रूमाल मुझसे गुम हो गया था।''

''ओह! बस इतनी सी बात इसका हल है मेरे पास।''

''अच्छा!'' मनु दीदी को आशा भरी दृष्टि से देखने लगा।

''हाँ! मनु जो भी काम करो बस ध्यान से करो।''

''चलो आज मैं तुम्हें सूर्य नमस्कार सिखा देती हूँ।''

मनु उनके साथ चला गया। वह तीन दिन में बहुत अच्छी तरह सूर्य नमस्कार करने लगा। बस वह हर काम ध्यान से कर रहा था। माता–पिता को लग रहा था कि मनु तो इस बार भी योग दिवस पर कुछ नहीं कर सकता।

तो अनमने मन से योग दिवस समारोह देखने आये। जब मनु मंच पर आया तो माता–पिता ने सोचा कि यह फिर कुछ गलत करेगा। किन्तु मनु ने लगातार बीस बार सारे सूर्य नमस्कार कर दिए। पूरी सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठी। माता–पिता को मनु पर गर्व हो उठा। मनु ने सम्मान लेते हुए अपनी शिक्षिका को प्रणाम करके उनका धन्यवाद किया। मनु का योग दिवस उसकी पहचान को निखार चुका था।

– कोटड़ा (राजस्थान)

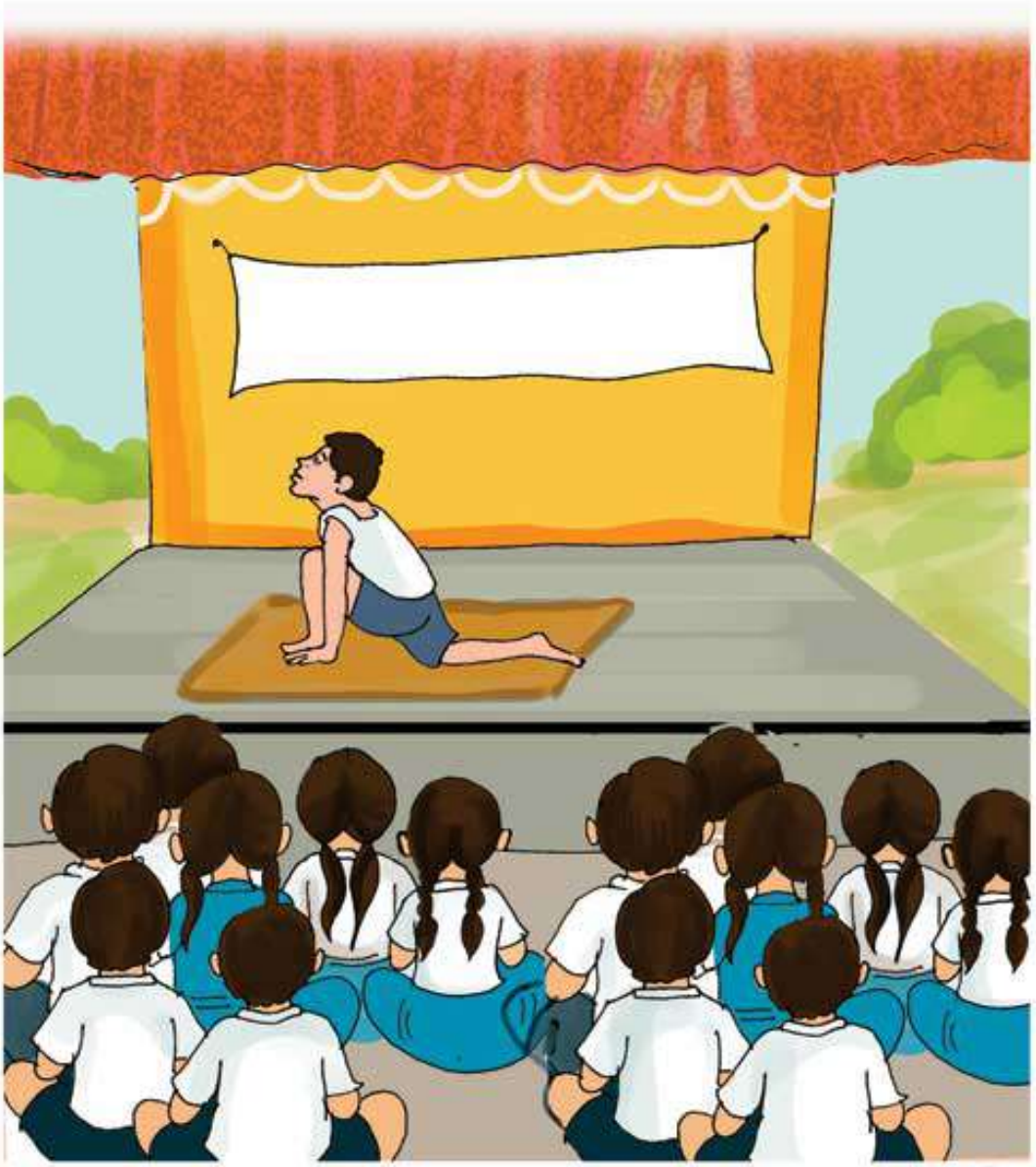

सबको लगे सुहानी

– डॉ. फहीम अहमद
सम्भल (उ. प्र.)

अपनी ये खिलखिलाहट,
चिड़ियों–सी चहचहाहट,
सबको लगे सुहानी।

हम सब की जो हँसी है,
बगिया–सी खिल रही है।
ऐसा लगे कि तितली,
फूलों से मिल रही है।
पँखुड़ियों जैसे लब पे,
फूलों–सी मुस्कराहट,
सबको लगे सुहानी।

बातें हमारी मीठी,
ज्यों रस भरी है लीची।
जुगनू सी झिलमिलाती,
तस्वीर सबने खींची।
टोली में अपनी प्यारी,
भौंरों सी गुनगुनाहट,
सबको लगे सुहानी।

सपने नये सलोने
क्या खूब सज रहे हैं।
दिल में नई उमंगों,
के गीत बज रहे हैं।
नन्हीं इन आँखों में ये,
सपनों की झिलमिलाहट,
सबको लगे सुहानी।

छः अँगुल मुस्कान

पत्नी– आ... आ... आ...

पति– क्या हुआ?

पत्नी– गले में दर्द है।

पति– बाजार जा रहा हूँ, गले के लिए कुछ लाऊँ?

लाना है तो नेकलेस ले आना पत्नी ने कहा।

*****

दुल्हन के हाथ का खाना पति ने पहली बार खाया। मिर्च बहुत अधिक थी। फिर भी वह कुछ नहीं बोला।

दुल्हन– खाना कैसा लगा?

पति– बहुत अच्छा।

दुल्हन– लेकिन आप रो क्यों रहे हैं?

दुल्हन– और दूँ?

पति– नहीं। मैं इससे अधिक खुशी बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा।

भिखारी– कुछ दे दो बाबू।

छोटू– १०० के छुट्टे हैं?

भिखारी– हाँ हैं, कितने काट कर लौटाने हैं?

छोटू– मैं दे कहाँ रहा हूँ। पहले उन्हें तो खर्च कर लो।

*****

रमेश (सुरेश से)– मेरे पास फेसबुक है, वॉट्सएप है। तुम्हारे पास क्या है?

सुरेश– मेरे पास ऑनलाइन काम है।

*****

सोनी– आजकल सबसे अधिक परेशानी तब होती है जब मोबाईल की बैटरी एक या दो परसेंट ही बचती है।

मोनी– हाँ, चूँकि हर घड़ी निगाहें उसी पर टिकी रहती है।

छोटी कहानी

बीमार मछली

– रमेश रंजन त्रिपाठी

भोजन करने के बाद जंगल के राजा की तबीयत बिगड़ गई। बंदर रसोइए की पेशी तो होनी ही थी। वह हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया– ''महाराज! मेरी कोई गलती नहीं है। महारानी ने फिश करी की फरमाइश की थी। मैंने तो महल में लाई गई मछली को पका दिया है। गड़बड़ी मछली लाने वाले ने की होगी।'' महल में मछलियाँ पहुँचाने वाले को बुलाया गया। वह डर से थर–थर काँप रहा था, बोला– ''माई बाप! मेरा दोष नहीं है। मैं तो जैसी मछलियाँ हमेशा लाता था, वैसी ही लाया हूँ। अवश्य यह मछलियों की बदमाशी है।''

शेर ने नील गाय से कहा कि मछलियों के मुखिया को लेकर आए। नील गाय ने बगुले की सिफारिश लगाकर पानी के बर्तन में मछलियों के मुखिया को शेर के सामने उपस्थित कर दिया। मेंढ़क की ड्यूटी लगाई गई कि वह मछली और शेर के बीच दुभाषिये का काम करेगा। ''तुम्हारी बीमार मछली जानबूझकर हमारा भोजन बनी और हमें भी बीमार कर दिया।'' जंगल का राजा दहाड़ा– ''कहीं हमारी जान लेने की साजिश तो नहीं?''

''महाराज! मछलियों को आपसे कोई शिकायत नहीं है।'' मछलियों के मुखिया ने सफाई दी– ''हम आपको नुकसान पहुँचाने का सोच भी नहीं सकते।'' ''फिर हमारा स्वास्थ्य खराब क्यों हुआ?'' शेर गुर्राया। ''प्राणों की भीख मिले तो कुछ कहूँ।'' मुखिया घिघियाया। ''हाँ! बोलो।'' शेर ने सिर हिलाया। ''मनुष्य अपनी गंदगी, कचरा, जहरीला अवशेष नदियों, तालाबों में बहा रहे हैं। नदियों, तालाबों का पानी दूषित हो गया है।'' मुखिया जंगल के राजा को समझाने का प्रयत्न करने लगा– ''इंसान जंगलों की बेतहाशा कटाई कर रहे हैं। प्रदूषण फैला रहे हैं। परिणाम यह है कि वर्षा कम हो रही। हवा अशुद्ध हो गई है। वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साईड की मात्रा बढ़ रही है। इसलिए पानी के ही नहीं जमीन और पेड़ों पर रहने वाले पशु–पक्षी भी बीमार हो रहे हैं। दूषित भोजन से स्वास्थ्य बिगड़ना स्वाभाविक है। अब तो आपका कोई भी शिकार बीमारी वाला हो सकता है।''

''क्या इंसानों पर पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने का असर नहीं हो रहा?'' शेर ने हाथी से पूछा। ''बहुत अधिक पड़ रहा है।'' हाथी बोला– ''बीमारी और पानी की परेशानियों से वे भी जूझ रहे हैं।'' ''वे इन कमियों को दूर क्यों नहीं करते?'' शेर झुंझलाया– ''माना उन्हें अपनी परवाह नहीं है लेकिन उनकी गलतियों का भुगतान हमको क्यों करना पड़ रहा है।''

''हम तो यही प्रार्थना कर सकते हैं कि आदमी को सद्‌बुद्धि आ जाए तो उनके साथ हम भी सुरक्षित रहें।'' हाथी ने उच्छवास ली। सबने एक मत से तय किया कि वे मनुष्यों को अपनी भावनाओं से अवगत कराने के लिए तोते की सहायता लेंगे। जंगल के राजा को उस रिपोर्ट की प्रतीक्षा है जिससे पता चले कि इंसानों पर पशु–पक्षियों की प्रार्थना का कितना असर हुआ? – **इन्दौर (म. प्र.)**

कहानी

माँ, सारी दुनिया से लड़कर

– श्यामपलट पांडेय

पिता सदा घर की छत बनता
माँ है चलाती घर–परिवार
पिता दिखाता नई दिशाएँ
माँ, जोड़ती है घर–संसार।

अँगुली पकड़ सिखाते चलना
कँधे पर वे मुझे घुमाते
जब भी कोई चीज माँगता
पिता मुझे जाकर दिलवाते।
मेरी हर जिद पूरी करती
माँ, सारी दुनिया से लड़कर
आँचल की छाया में रखती
बातें करती मुझ से हँसकर।
कहतीं, तुम्हें बहुत पढ़ना है
पढ़–लिख कर ऊँचे जाना है
बड़ा आदमी बन कर बेटे
तुझे एक दिन दिखलाना है।

– अहमदाबाद
(गुजरात)

विश्व संगीत दिवस : २१ जून

अर्थ अनेक

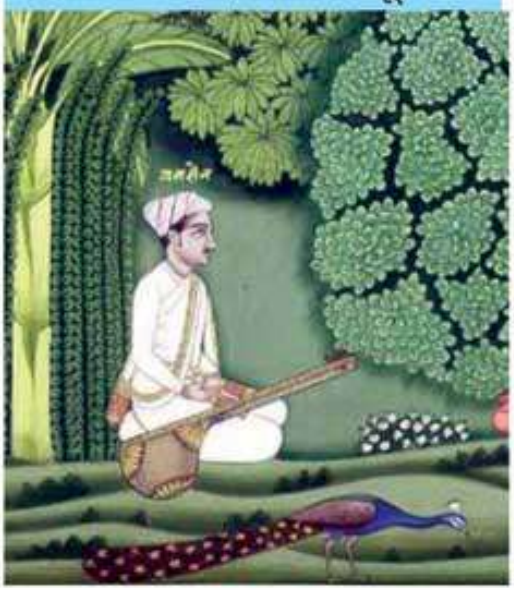

एक बार प्रसिद्ध संगीताचार्य तानसेन ने एक भजन गाया–

जसुदा बार बार यों भाखै।
है कोउ ब्रज में हितू हमारो, चलत गोपालहिं राखै।।

पद का अर्थ अकबर की समझ में नहीं आया, उसने दरबारियों से इसका अर्थ पूछा। तब तानसेन ने कहा– ''यशोदा बार–बार कहती है– क्या ब्रज में हमारा कोई ऐसा हितैषी है, जो गोपाल को मथुरा जाने से रोक सके?'' इस पर अबुल फजल बोले– ''नहीं नहीं आपको इसका अर्थ समझ में नहीं आया, 'बार बार' का अर्थ 'रोना' है यानी यशोदा रो–रो कर कहती है। बीरबल बोले मेरे विचार से तो 'बार–बार' का अर्थ 'द्वार–द्वार' है। रहीम भी वहाँ उपस्थित थे उन्हें यह अर्थ भी नहीं जँचा बोले 'बार–बार' का अर्थ है बाल बाल यानि 'रोम–रोम'। इतने में एक ज्योतिषी उठ खड़ा हुआ और बोला इनमें से एक भी अर्थ ठीक नहीं है वास्तव में 'बार' का अर्थ 'वार' यानि दिन है अर्थात् यशोदा प्रतिदिन कहती है। यह सुनकर बादशाह को आश्चर्य हुआ। बोला– एक ही शब्द का लोग अलग–अलग अर्थ कैसे बता रहे हैं? तब रहीम कवि बोले– ''जहाँपनाह! प्रत्येक व्यक्ति किसी शब्द का अर्थ अपनी–अपनी परिस्थिति और चित्तवृत्ति के अनुसार ही लगाता है।'' ऐसी गहराई समझने के लिए भारतीयमन हो तो सुगम होता है।

देवपुत्र

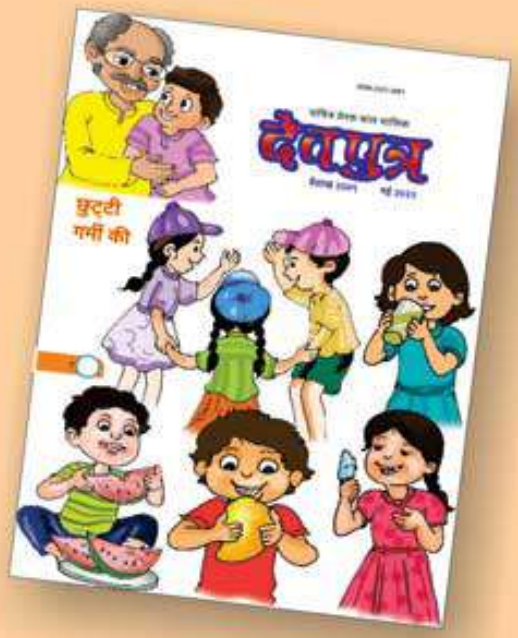

के पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

आत्मीय प्रधानाचार्य, प्राचार्य बन्धु-भगिनियों एवं पाठकगण!

विगत दिनों कागज एवं मुद्रण व्यवस्थाओं में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है जिसका प्रभाव आपकी अपनी प्रिय पत्रिका देवपुत्र पर भी हुआ है। विगत पाँच वर्षों से देवपुत्र के मूल्य में कोई वृद्धि नहीं की गई थी, लेकिन अब इसके संचालक न्यास को विवश होकर इसे आप सब तक निरंतर पहुँचाते रहने के लिए इसके शुल्क में वृद्धि करना पड़ रही है।

अब आगामी माह जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार रहेगा।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

विद्यालयों द्वारा एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक निश्चित हुआ है।

कृपया नवीन सदस्यता हेतु जुलाई २०२२ से इस संशोधित शुल्क के मान से शुल्क भेजकर आप अपना सहयोग एवं स्नेह देवपुत्र को पूर्ववत् प्रदान करते रहेंगे यही विश्वास है।

निवेदक

राकेश भावसार
प्रबंध न्यासी

कृष्णकुमार अष्ठाना
प्रधान संपादक

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०५/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/०५/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बाता।

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब ***Jio Net*** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना